भव्य मार्गणा

Presentation Developed By :
Smt Sarika Vikas Chhabra

भविया सिद्धी जेसिं, जीवाणं ते हवंति भवसिद्धा।
तव्विवरीयाऽभव्वा, संसारादो ण सिज्झंति॥557॥

❀अर्थ - जिन जीवों की अनंत चतुष्टयरूप सिद्धि होनेवाली हो अथवा जो उसकी प्राप्ति के योग्य हों उनको भव्यसिद्ध कहते हैं।

❀जिनमें इन दोनों में से कोई भी लक्षण घटित न हो उन जीवों को अभव्यसिद्ध कहते हैं ॥557॥

भव्य- अभव्यसिद्ध

भव्य

- जिन जीवों की अनंत चतुष्टयरूप स्वरूप की सिद्धि होने की योग्यता है अथवा होने वाली हो उन्हें भव्य कहते हैं ।

अभव्य

- जिन जीवों की अनंत चतुष्टयरूप स्वरूप की सिद्धि होने की योग्यता नहीं है उन्हें अभव्य कहते हैं ।

भव्वत्तणस्स जोग्गा, जे जीवा ते हवंति भवसिद्धा।
ण हु मलविगमे णियमा, ताणं कणओवलाणमिव॥558॥

❁अर्थ - जो जीव भव्यत्व, अर्थात् सम्यग्दर्शनादिक सामग्री को पाकर अनंतचतुष्टयरूप होना, उसके केवल योग्य ही हैं, तद्रूप नहीं होते हैं, वे भव्यसिद्धिक सदाकाल संसार को प्राप्त रहते हैं।

❁किस कारण? - जैसे कई सुवर्ण सहित पाषाण ऐसे होते हैं उनके कभी भी मैल के नाश करने की सामग्री नहीं मिलती, वैसे कई भव्य ऐसे हैं जिनके कभी भी कर्ममल नाश करने की सामग्री नियम से नहीं होती हैं ॥558॥

भव्य जीव

मुक्ति की मात्र योग्यता है

काल पाकर मुक्ति होगी

अभव्यसमान भव्य

जैसे कई स्वर्णपाषाण ऐसे हैं, जिन्हें मैल नाश करने की सामग्री ही नहीं मिलती, वैसे जिन्हें कर्म नाश करने की सामग्री ही प्राप्त नहीं होती, वे भी भव्य हैं ।

ण य जे भव्वाभव्वा, मुत्तिसुहातीदणंतसंसारा।
ते जीवा णायव्वा, णेव य भव्वा अभव्वा य॥559॥

❀अर्थ - जो जीव कुछ नवीन ज्ञानादिक अवस्था को प्राप्त होनेवाले नहीं इसलिये भव्य भी नहीं हैं और अनंतचतुष्टयरूप हुये है इसलिये अभव्य भी नहीं हैं, ऐसे मुक्ति-सुख के भोक्ता अनंत संसार से रहित हुये वे जीव भव्य भी नहीं, अभव्य भी नहीं हैं, जीवत्व पारिणामिक के धारक हैं, ऐसे जानने ॥559॥

न भव्य, न अभव्य

नवीन ज्ञानादिक को प्राप्त नहीं करते

अत: भव्य नहीं

अनंत चतुष्टयरूप हुए हैं

अत: अभव्य नहीं

ऐसे मुक्ति-सुख के भोक्ता

अनंत संसार से रहित

सिद्ध भगवान 'न भव्य, न अभव्य' हैं ।

अवरो जुत्ताणंतो, अभव्वरासिस्स होदि परिमाणं।
तेण विहीणो सव्वो, संसारी भव्वरासिस्स॥560॥

- अर्थ - जघन्य युक्तानन्तप्रमाण अभव्य राशि है और
- संपूर्ण संसारी जीवराशि में से अभव्यराशि का प्रमाण घटाने पर जो शेष रहे उतना ही भव्यराशि का प्रमाण है ॥560॥

भव्य मार्गणा - संख्या

अभव्य राशि
- जघन्य युक्त अनंत

भव्य राशि
- संसारी राशि – अभव्य राशि
- १३ – जघन्य युक्त अनंत
- १३-

अनुभय राशि
- अनन्त

पञ्च परिवर्तन

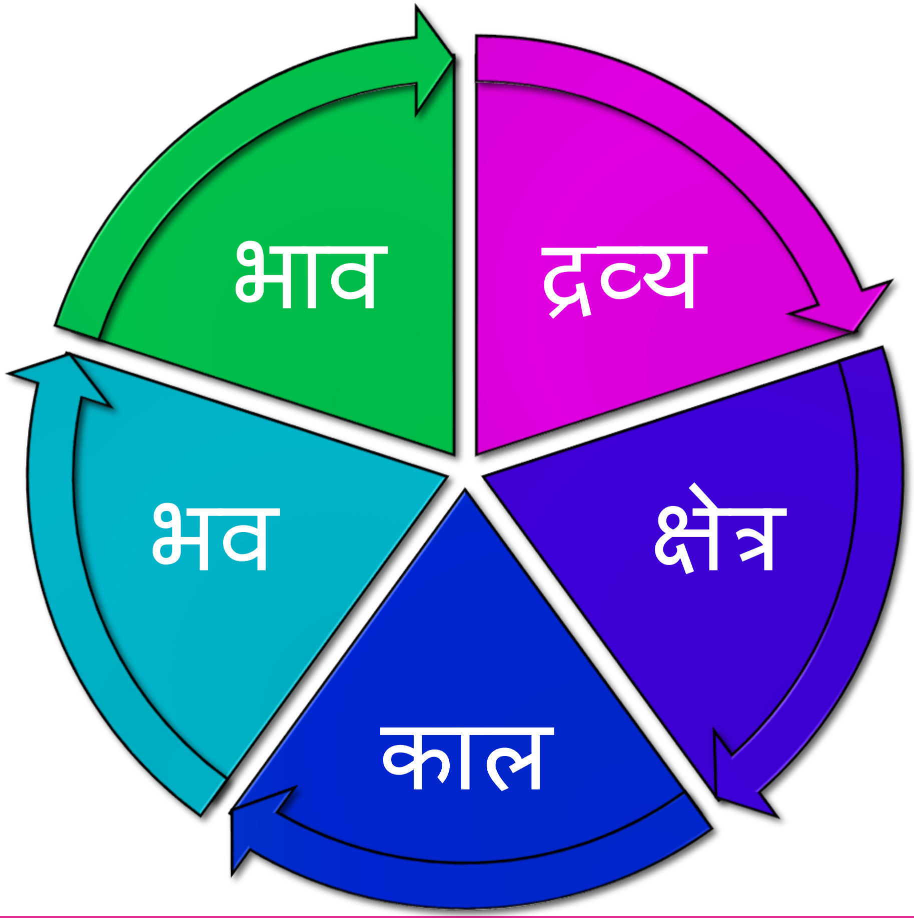

परिवर्तन, परिभ्रमण, संसार – इन सबका एक ही अर्थ है ।

ऐसा परिवर्तन पाँच प्रकार का है ।

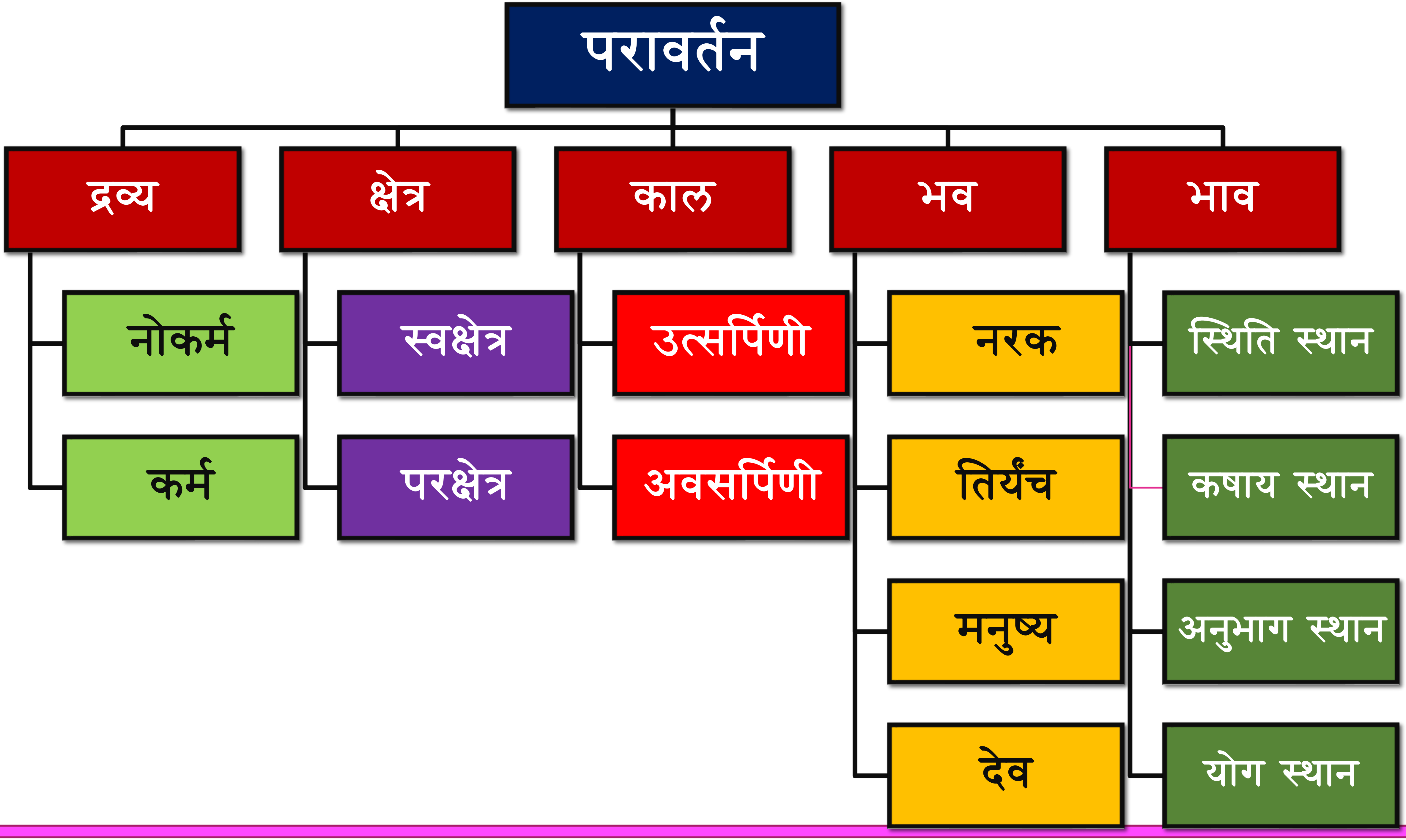
परावर्तन
द्रव्य
क्षेत्र
काल
भव
भाव
नोकर्म
कर्म
स्वक्षेत्र
परक्षेत्र
उत्सर्पिणी
अवसर्पिणी
नरक
तिर्यंच
मनुष्य
देव
स्थिति स्थान
कषाय स्थान
अनुभाग स्थान
योग स्थान

द्रव्य परिवर्तन

गृहीत पुद्गल स्कंधों के
विशिष्ट पुनर्ग्रहण में लगने वाला समय
द्रव्य परिवर्तन कहलाता है ।

द्रव्य परिवर्तन

नोकर्म परिवर्तन + कर्म परिवर्तन = द्रव्य परिवर्तन

द्रव्य परिवर्तन को पुद्गल परिवर्तन भी कहते हैं ।

नोकर्म पुद्गल परिवर्तन

जीव ने किसी एक समय

स्निग्ध, रूक्षत्व, वर्ण आदि भावसहित नोकर्म वर्गणाओं के एक समयप्रबद्ध को यथायोग्य ग्रहण किया ।

फिर द्वितीयादि समय से इनकी निर्जरा करके छोड़ा ।

अनंत बार अगृहीत परमाणुओं को ग्रहण करके छोड़ा ।

अनंत बार मिश्र परमाणुओं को ग्रहण करके छोड़ा ।

अनंत बार गृहीत परमाणुओं को ग्रहण करके छोड़ा ।

ऐसा होने के पश्चात् जिस किसी काल में

प्रथम समय में जो पुद्गल	वे ही पुद्गल
जैसे स्निग्ध, रूक्षत्व आदि से युक्त	वैसे ही स्निग्ध, रूक्षत्व आदि से युक्त
जितनी संख्या में	उतनी ही संख्या में
ग्रहण किए थे	पुनः ग्रहण किए

ऐसे काल समुदाय को नोकर्म द्रव्य परिवर्तन कहते हैं ।

नोकर्म वर्गणा

औदारिक, वैक्रियिक, आहारक इन तीन शरीररूप तथा

छह पर्याप्तिरूप होने योग्य

पुद्गल वर्गणाओं को

नोकर्म वर्गणा कहते हैं |

नोकर्म वर्गणाओं का ग्रहण और निर्जरा

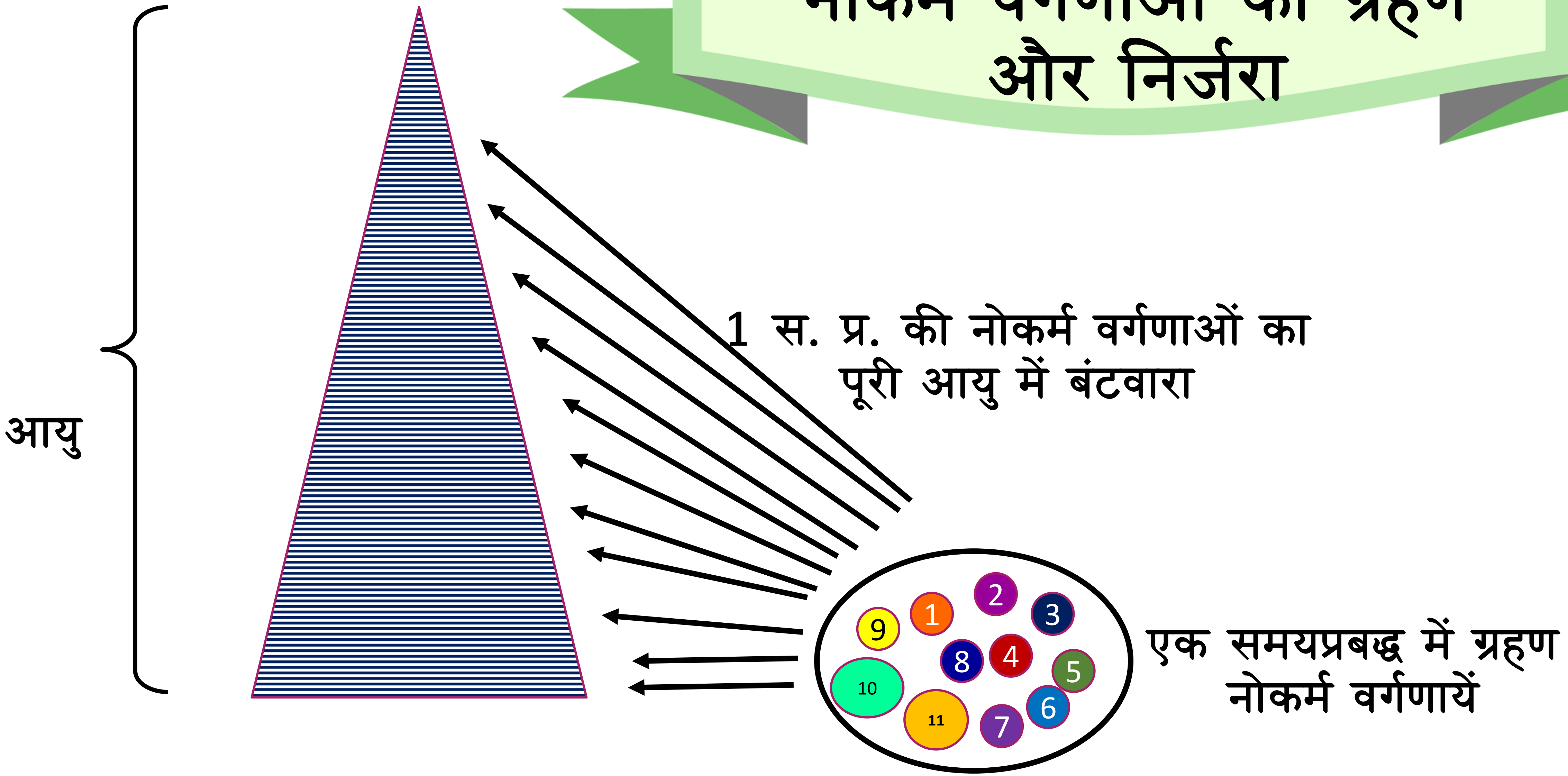

समयप्रबद्ध

एक समय में जीव से संबद्ध होने वाले नोकर्म या कर्म के परमाणुओं को समयप्रबद्ध कहते हैं ।

समयप्रबद्ध का प्रमाण

↓

अभव्य राशि × अनन्त अथवा $\frac{\text{सिद्ध}}{\text{अनंत}}$

समयप्रबद्ध या परमाणुओं के प्रकार

अगृहीत

- जिन परमाणुओं को विवक्षित परिवर्तन प्रारंभ होने के समय से अभी तक ग्रहण नहीं किया है, ऐसे परमाणुओं का स्कंध अगृहीत है ।

गृहीत

- जीव के द्वारा ग्रहण किए हुए परमाणु जिस समयप्रबद्ध में हों, वे गृहीत कहलाते हैं ।

मिश्र

- जिस समयप्रबद्ध में गृहीत, अगृहीत दोनों प्रकार के परमाणु हो, उसे मिश्र कहते हैं ।

प्रश्न— सारे परमाणुओं को जीव द्वारा ग्रहण किया जा चुका है । फिर अगृहीत परमाणु कैसे संभव हैं ?

उत्तर— सारे परमाणुओं को एक जीव के द्वारा तो क्या, सारे जीवों के द्वारा भी ग्रहण नहीं किया गया ।

आज तक भी सारे गृहीत परमाणुओं की संख्या

1 समयप्रबद्ध × अतीत काल = 1 जीव द्वारा गृहीत सर्व परमाणु

1 समयप्रबद्ध × अतीत काल × सर्व जीव राशि = सर्व जीवों द्वारा गृहीत सर्व परमाणु

इस उपर्युक्त राशि से पुद्गल अनंत गुणे हैं ।

क्योंकि जीव राशि से अनंत वर्गस्थान आगे जाकर पुद्गलों की संख्या आती है ।

और यह निकली राशि कुल पुद्गलों का अनंतवां भाग मात्र है ।

अर्थात् सारे पुद्गलों को सभी जीवों ने मिलकर भी ग्रहण नहीं किया है ।

विशेष

यहा परिवर्तन के प्रकरण में अगृहीत का अर्थ है –

उस विवक्षित परिवर्तन में

जिन परमाणुओं को

अब तक ग्रहण नहीं किया, वे अगृहीत कहलाते हैं ।

उनका समूहरूप समयप्रबद्ध अगृहीत होता है ।

पुद्गल परिवर्तन का काल

अगृहीत ग्रहण काल + गृहीत ग्रहण काल + मिश्र ग्रहण काल

अगृहीत ग्रहण काल — अगृहीत परमाणुओं के ग्रहण का काल

गृहीत ग्रहण काल — गृहीत परमाणुओं के ग्रहण का काल

मिश्र ग्रहण काल — गृहीत व अगृहीत दोनों परमाणुओं के एक साथ ग्रहण का काल

इनका ग्रहण कैसे होता है ?

नोकर्म द्रव्य परिवर्तन यंत्र

0 – अगृहीत
+ – मिश्र
1 – गृहीत

1	00+	00+	001	00+	00+	001
2	++0	++0	++1	++0	++0	++1
3	++1	++1	++0	++1	++1	++0
4	11+	11+	110	11+	11+	110

नोट:

1. अगर कोई चिह्न पुनः आता है तो इसका अर्थ है कि उस प्रक्रिया को अनंत बार करना है। 00 दो बार है | अतः यह प्रक्रिया अनन्त बार करनी है।

2. बीच-बीच में जीव जो अन्य नोकर्म वर्गणाओं को ग्रहण करेगा वे गिनती में नहीं मानी जायेंगी पर उनका समय गिना जायेगा।

प्रथम पंक्ति – प्रथम कोठा

विवक्षित नोकर्म द्रव्य परिवर्तन के प्रथम समय में

पहली बार समयप्रबद्ध में अगृहीत परमाणु ग्रहण करे ।

दूसरी बार समयप्रबद्ध में अगृहीत परमाणु ग्रहण करे ।

तीसरी बार समयप्रबद्ध में अगृहीत परमाणु ग्रहण करे ।

ऐसे अनंत बार समयप्रबद्ध में अगृहीत परमाणु ग्रहण करे ।

उसके पश्चात् एक बार समयप्रबद्ध में मिश्र परमाणु ग्रहण करे ।

ऐसा करने पर प्रथम कोठा पूर्ण हुआ ।

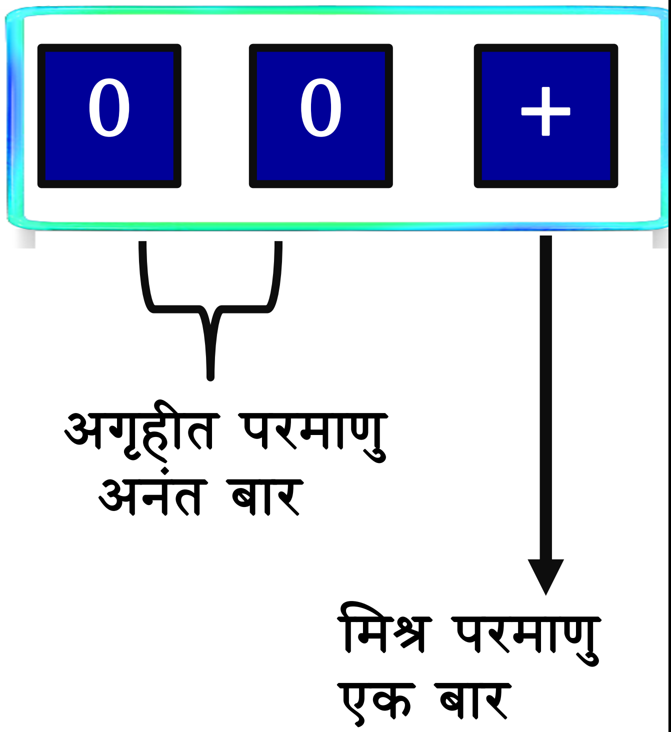

प्रथम पंक्ति – द्वितीय कोठा

पुनः एक बार अगृहीत ग्रहण करे ।

दूसरी बार अगृहीत ग्रहण करे ।

ऐसे अनंत बार अगृहीत ग्रहण करे ।

फिर एक बार मिश्र ग्रहण करे ।

तब मिश्र का ग्रहण दो बार हुआ ।

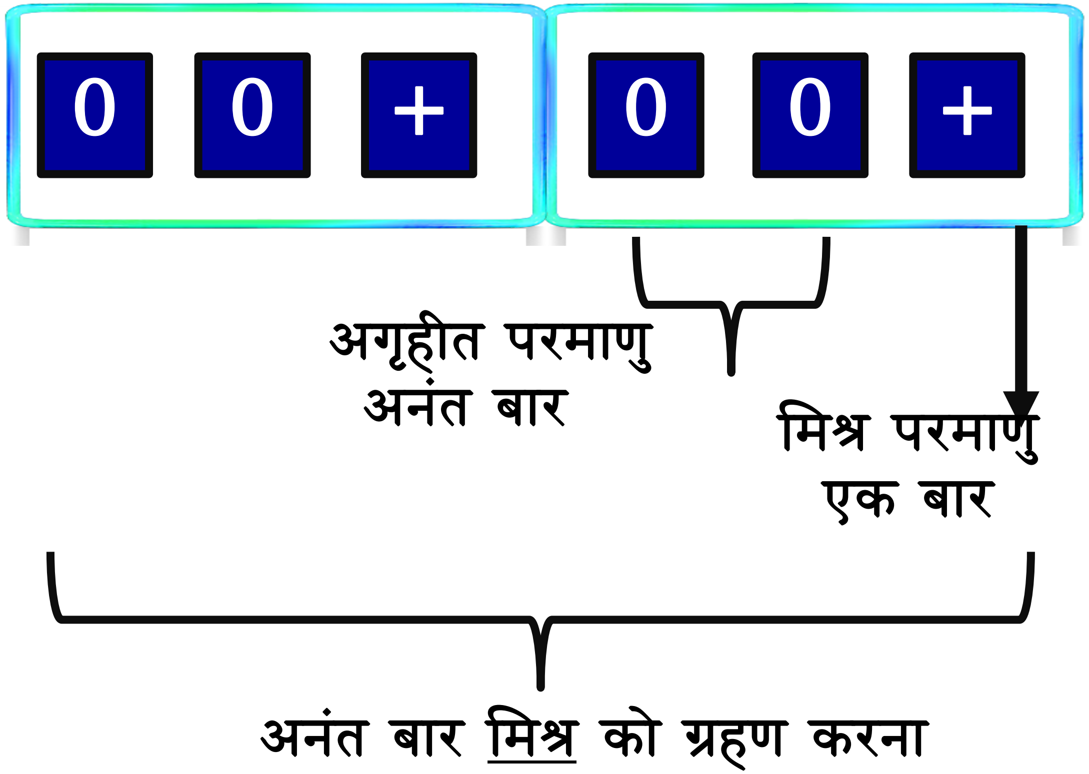

चूंकि प्रथम एवं द्वितीय कोठा समान है, अतः इस प्रक्रिया को कुल अनंत बार करना है,

अर्थात् अनंत बार मिश्र को ग्रहण करना है तब द्वितीय कोठा पूरा होता है ।

प्रथम पंक्ति – द्वितीय कोठा

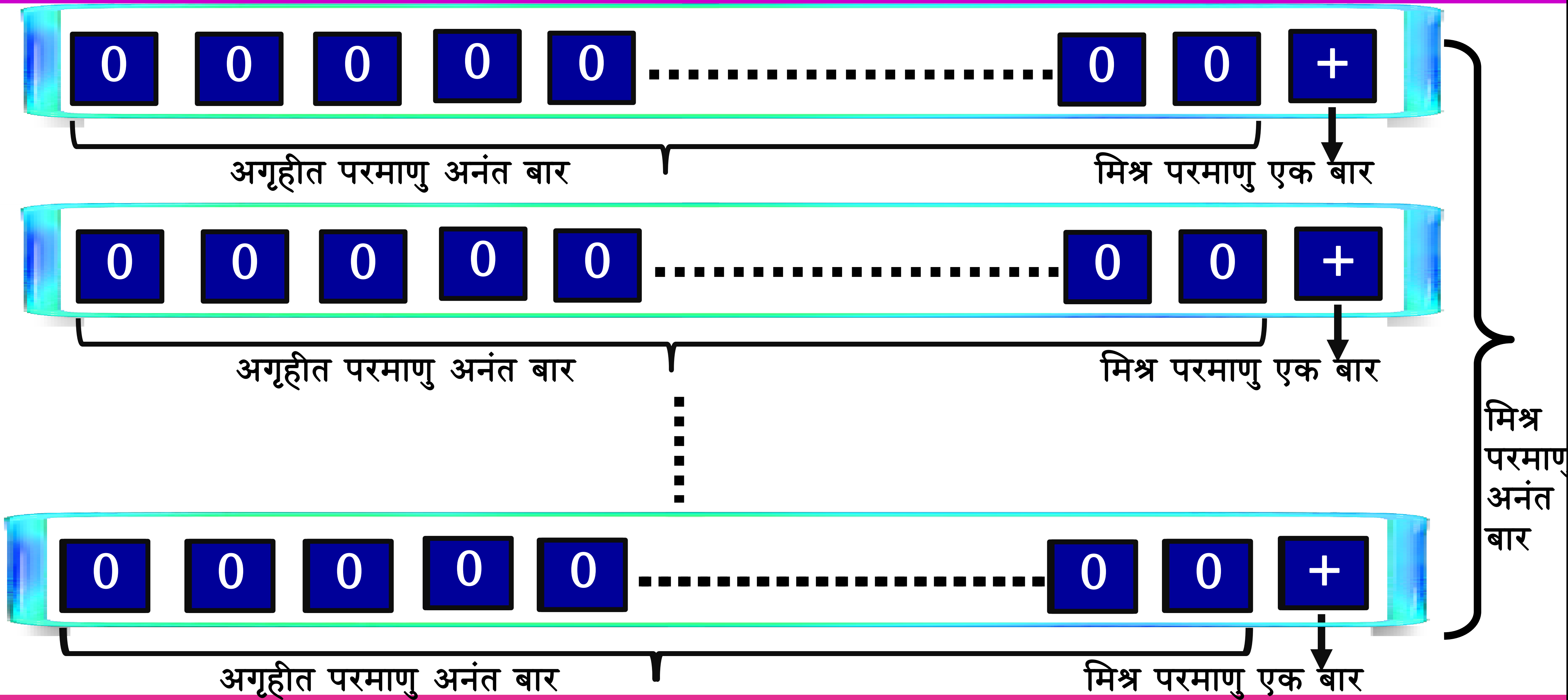

प्रथम पंक्ति

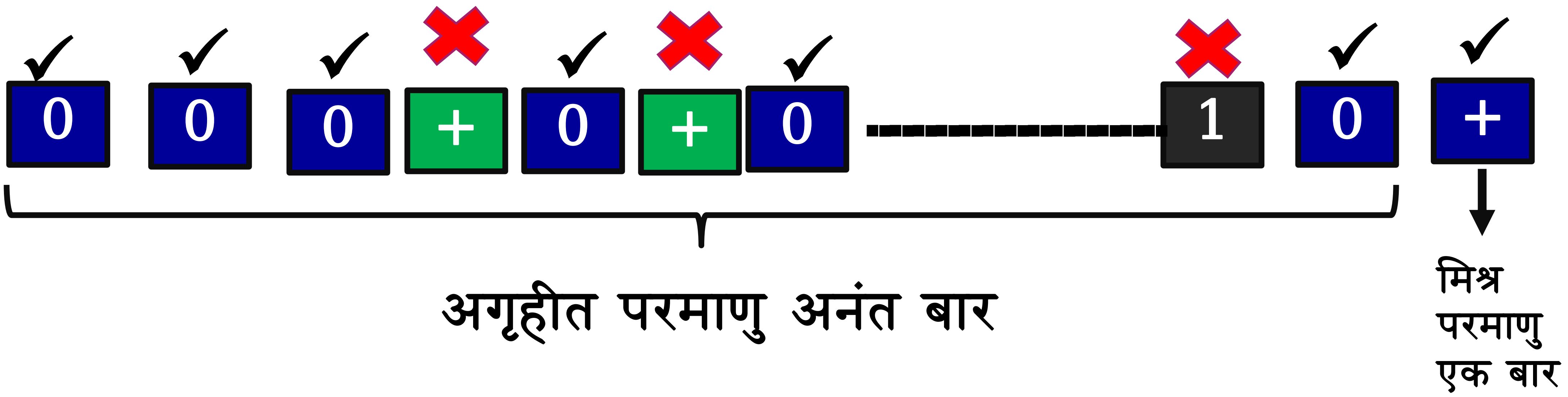

प्रथम पंक्ति – तृतीय कोठा

पुनः एक बार अगृहीत को ग्रहण किया ।

दूसरी बार अगृहीत ग्रहण करे ।

ऐसे अनंत बार अगृहीत ग्रहण करे ।

उसके बाद एक बार गृहीत को ग्रहण किया ।

तब प्रारंभ के तीन कोठे पूरे होते हैं ।

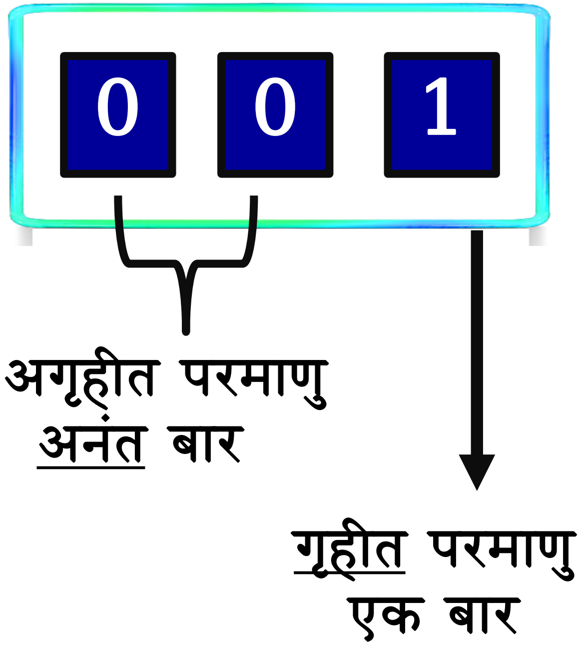

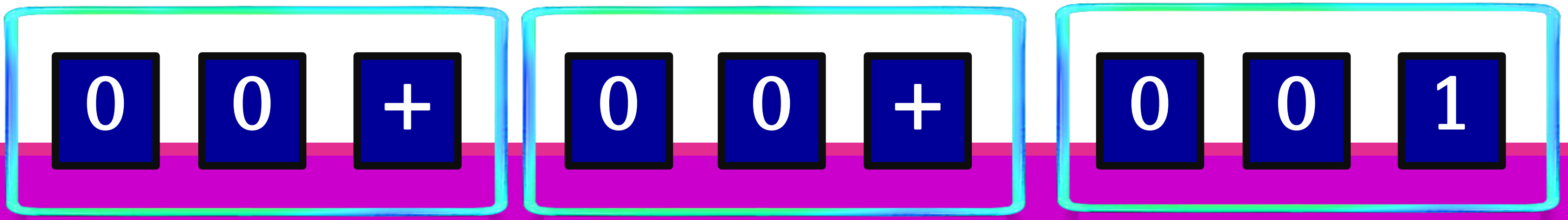

प्रथम पंक्ति – अंतिम 3 कोठे

1st	00+	00+	001	00+	00+	001

जैसे एक बार गृहीत को ग्रहण किया है, वैसे सारी विधि से अनंत बार गृहीत को ग्रहण करना । क्योंकि प्रथम तीन कोठों के समान ही आगे के तीन कोठे हैं ।

अर्थात् अनंत बार अगृहीत के ग्रहणपूर्वक एक बार मिश्र का ग्रहण

ऐसे अनंत बार मिश्र का ग्रहण

फिर अनंत बार अगृहीत के ग्रहणपूर्वक एक बार गृहीत का ग्रहण

ऐसे अनंत बार गृहीत को ग्रहण करने पर प्रथम पंक्ति पूर्ण होती है ।

द्वितीय पंक्ति

एक बार मिश्र को ग्रहण करे ।

दूसरी बार मिश्र को ग्रहण करे ।

चूंकि + दो बार है, अत: इस प्रक्रिया को अनंत बार करे ।

अनंत बार मिश्र के ग्रहण के बाद

एक बार अगृहीत को ग्रहण करे ।

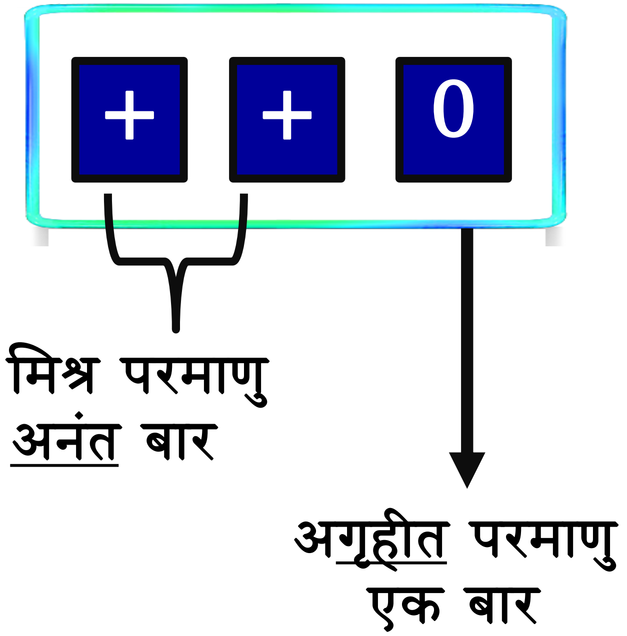

द्वितीय पंक्ति – प्रथम 3 कोठे

पुन: अनंत बार मिश्र को ग्रहण करके

एक बार अगृहीत को ग्रहण करे ।

चूंकि द्वितीय कोठा प्रथम कोठे के समान है, अत: इस प्रक्रिया को अनंत बार करे । याने अनंत बार अगृहीत को ग्रहण करे ।

तत्पश्चात् अनंत बार मिश्र को ग्रहण करके

एक बार गृहीत को ग्रहण करे ।

तब प्रथम तीन कोठे पूर्ण हुए ।

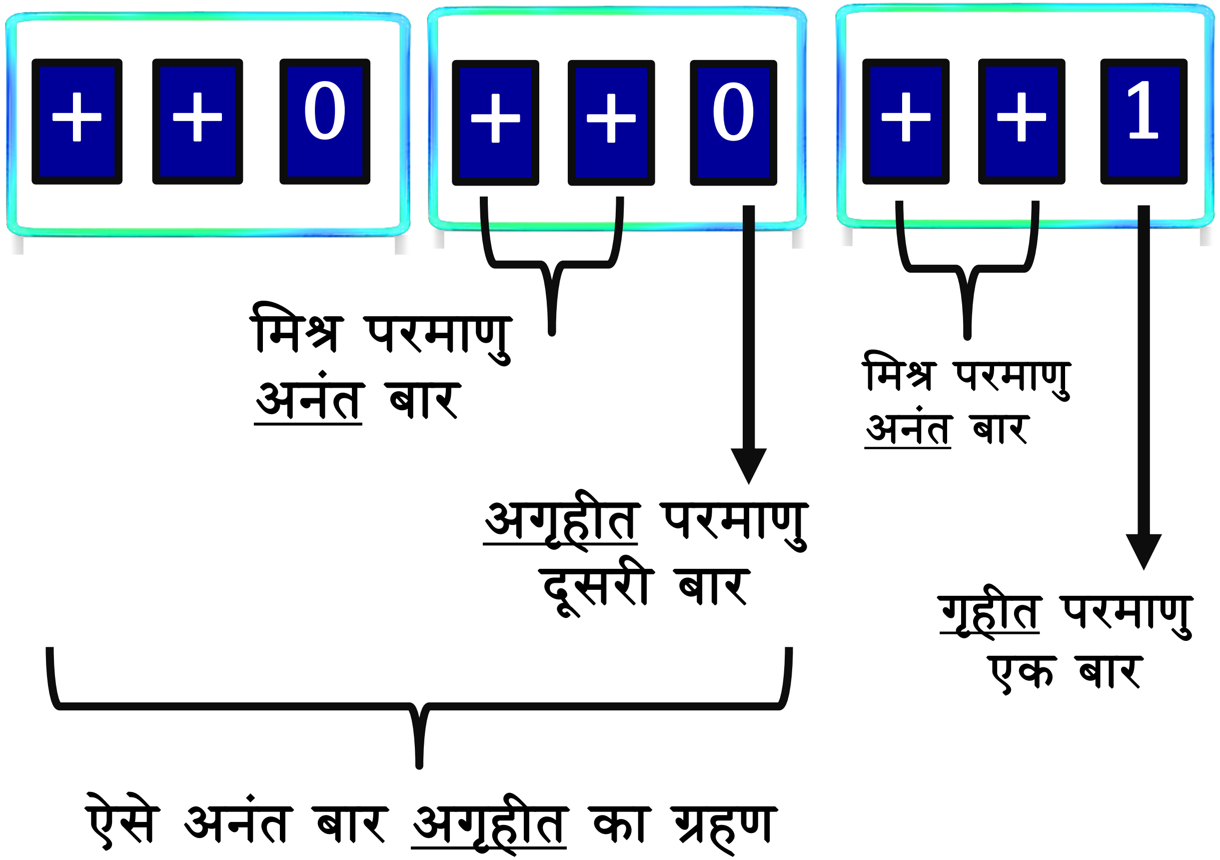

द्वितीय पंक्ति – अंतिम 3 कोठे

1st	00+	00+	001	00+	00+	001
2nd	++0	++0	++1	++0	++0	++1

चूंकि प्रथम तीन के समान ही आगे के तीन कोठे हैं । अतः इस प्रक्रिया को अनंत बार करे ।

अनंत बार मिश्र के ग्रहणपूर्वक एक बार अगृहीत का ग्रहण है । ऐसे अनंत बार अगृहीत को ग्रहण करे ।

फिर अनंत बार मिश्र के ग्रहणपूर्वक एक बार गृहीत को ग्रहण करे ।

ऐसे अनंत बार गृहीत को ग्रहण करे ।

इस प्रकार द्वितीय पंक्ति पूर्ण हुई ।

तृतीय पंक्ति

एक बार मिश्र को ग्रहण करे ।

दूसरी बार मिश्र को ग्रहण करे ।

चूंकि + दो बार है, अतः इस प्रक्रिया को अनंत बार करे ।

अनंत बार मिश्र के ग्रहण के बाद

एक बार गृहीत को ग्रहण करे ।

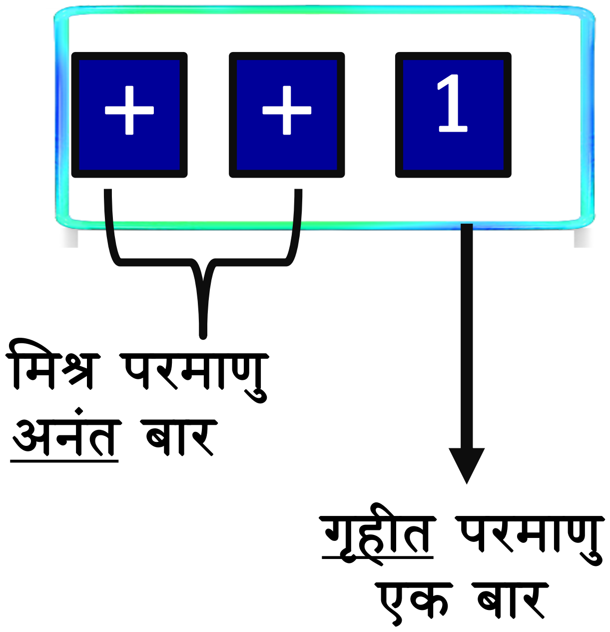

तृतीय पंक्ति – प्रथम 3 कोठे

पुनः अनंत बार मिश्र को ग्रहण करके

एक बार गृहीत को ग्रहण करे ।

चूंकि द्वितीय कोठा प्रथम कोठे के समान है, अतः इस प्रक्रिया को अनंत बार करे । याने अनंत बार गृहीत को ग्रहण करे ।

तत्पश्चात् अनंत बार मिश्र को ग्रहण करके

एक बार अगृहीत को ग्रहण करे ।

तब प्रथम तीन कोठे पूर्ण हुए ।

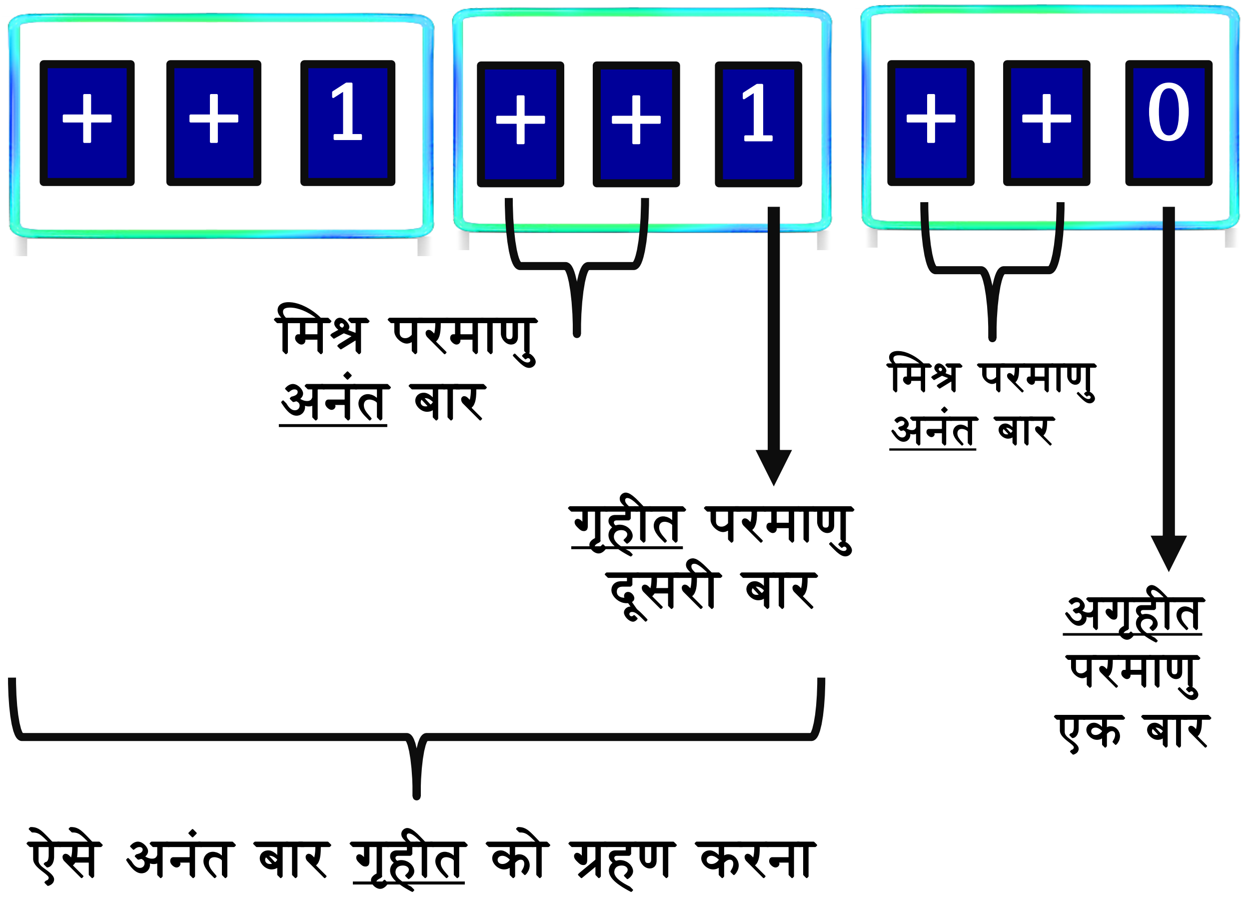

तृतीय पंक्ति – अंतिम 3 कोठे

3rd	++1	++1	++0	++1	++1	++0

चूंकि प्रथम तीन के समान ही आगे के तीन कोठे हैं। अत: इस प्रक्रिया को अनंत बार करे।

अनंत बार मिश्र के ग्रहणपूर्वक एक बार गृहीत का ग्रहण करे। ऐसे अनंत बार गृहीत का ग्रहण करे।

फिर अनंत बार मिश्र के ग्रहणपूर्वक एक बार अगृहीत का ग्रहण करे।

ऐसे अनंत बार अगृहीत को ग्रहण करे।

इस प्रकार तृतीय पंक्ति पूर्ण हुई।

चतुर्थ पंक्ति – प्रथम 3 कोठे

अनंत बार गृहीत को ग्रहण करे ।

फिर एक बार मिश्र को ग्रहण करे ।

ऐसे अनंत बार गृहीत को ग्रहण करके दूसरी बार मिश्र को ग्रहण करे ।

ऐसी विधि से अनंत बार मिश्र को ग्रहण करे ।

फिर अनंत बार गृहीत को ग्रहण करके एक बार अगृहीत को ग्रहण करे ।

इस प्रकार प्रथम तीन कोठे पूर्ण हुए ।

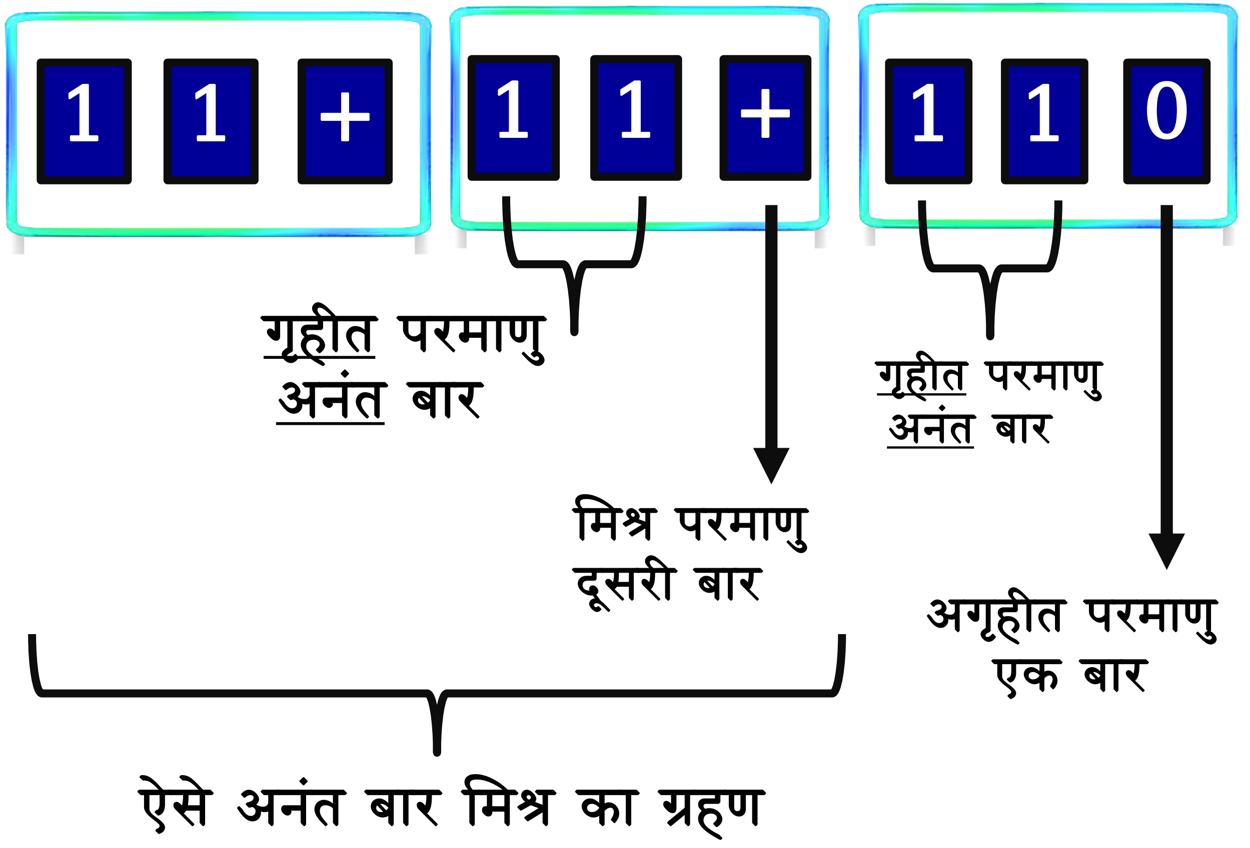

चतुर्थ पंक्ति – अंतिम 3 कोठे

4th	11+	11+	110	11+	11+	110

प्रथम 3 कोठों के समान आगे के तीन कोठे हैं । अतः इस प्रक्रिया को अनंत बार करना है ।

अर्थात् अनंत बार गृहीत के ग्रहणपूर्वक एक बार मिश्र का ग्रहण करे । ऐसे अनंत बार मिश्र का ग्रहण करे ।

फिर अनंत बार गृहीत के ग्रहणपूर्वक एक बार अगृहीत का ग्रहण करे ।

ऐसे अनंत बार अगृहीत को ग्रहण करने पर यह चतुर्थ पंक्ति समाप्त होती है ।

उसके अनंतर समय में

Same Identity	जो	वे
Same Quantity	जितने	उतने
Same Quality	जैसे परमाणु	वैसे ही परमाणु
	परिवर्तन के पहले समय ग्रहण किए थे	पुनः ग्रहण होते हैं ।

तब यह सब मिला हुआ काल <u>नोकर्म द्रव्य परिवर्तन</u> कहलाता है ।

विशेष

जिस विवक्षित पद को गिना जा रहा है, उसके बीच में अन्य जो पद पाए जावें, उनकी गिनती नहीं होगी, पर काल गिनती में आएगा ।

यह जो क्रमपूर्वक पुद्‌गलों का ग्रहण कहा है, वह लगातार बिना अन्य परमाणु के ग्रहण के होता है — ऐसा नहीं है ।

बीच-बीच में अन्य प्रकार के परमाणु भी ग्रहण होते हैं ।

जैसे अनंत बार अगृहीत का ग्रहण कहा है, तो बीच में गृहीत और मिश्र का ग्रहण भी जीव द्वारा होता है ।

वहा वे गृहीत व मिश्र के परमाणु गिनती में नहीं आते, केवल अगृहीत के बार गिने जाते हैं ।

विशेष

जैसे माना कि अगृहीत का 5 बार ग्रहण करना है, तो जीव ने इस प्रकार ग्रहण किये –

0+++0+++++++11011++0+0

यहा प्रारंभ से लेकर जब तक अगृहीत 5 बार ग्रहण नहीं हो जाता, तब तक उसी की गिनती चलेगी और काल सबका गिना जाएगा ।

इस उदाहरण में 5 बार अगृहीत के ग्रहण में लगा काल 21 समय है ।

यह नियम सभी परिवर्तनों में जानना चाहिए ।

कर्म पुद्गल परिवर्तन

किसी जीव ने एक समय में

8 कर्म संबंधित जितनी कार्मण वर्गणा	उतनी ही (same quantity)
जो कार्मण वर्गणा	वे ही (वैसे नहीं) (same to same)
जितने स्थिति, अनुभागादि से युक्त	वैसी ही (same quality)
ग्रहण किये थे	कार्मण वर्गणा पुनः ग्रहण करे

तब वह कर्म परिवर्तन कहलाता है ।

विशेष

कर्म पुद्गल परिवर्तन में भी नोकर्म परिवर्तन के यंत्र की तरह कर्म परमाणुओं का ग्रहण होता है।

नोकर्म परिवर्तन में नोकर्म की निर्जरा अगले समय से ही प्रारंभ हो जाती है । परन्तु कर्म परिवर्तन में बद्ध कर्म आबाधा काल के पश्चात् निर्जरा होकर छूटते हैं ।

यहा भी अगृहीत, गृहीत और मिश्र कर्म परमाणु जानने चाहिए ।

पुद्गल परिवर्तन का आधा काल अर्ध पुद्गल परिवर्तन कहलाता है । यह भी अनंत सागर प्रमाण है ।

कोई सम्यक्त्व प्राप्ति के बाद भी मिथ्यात्व अवस्था में इतना काल संसार में भ्रमण कर सकता है।

कर्म वर्गाणाओं का ग्रहण और निर्जरा

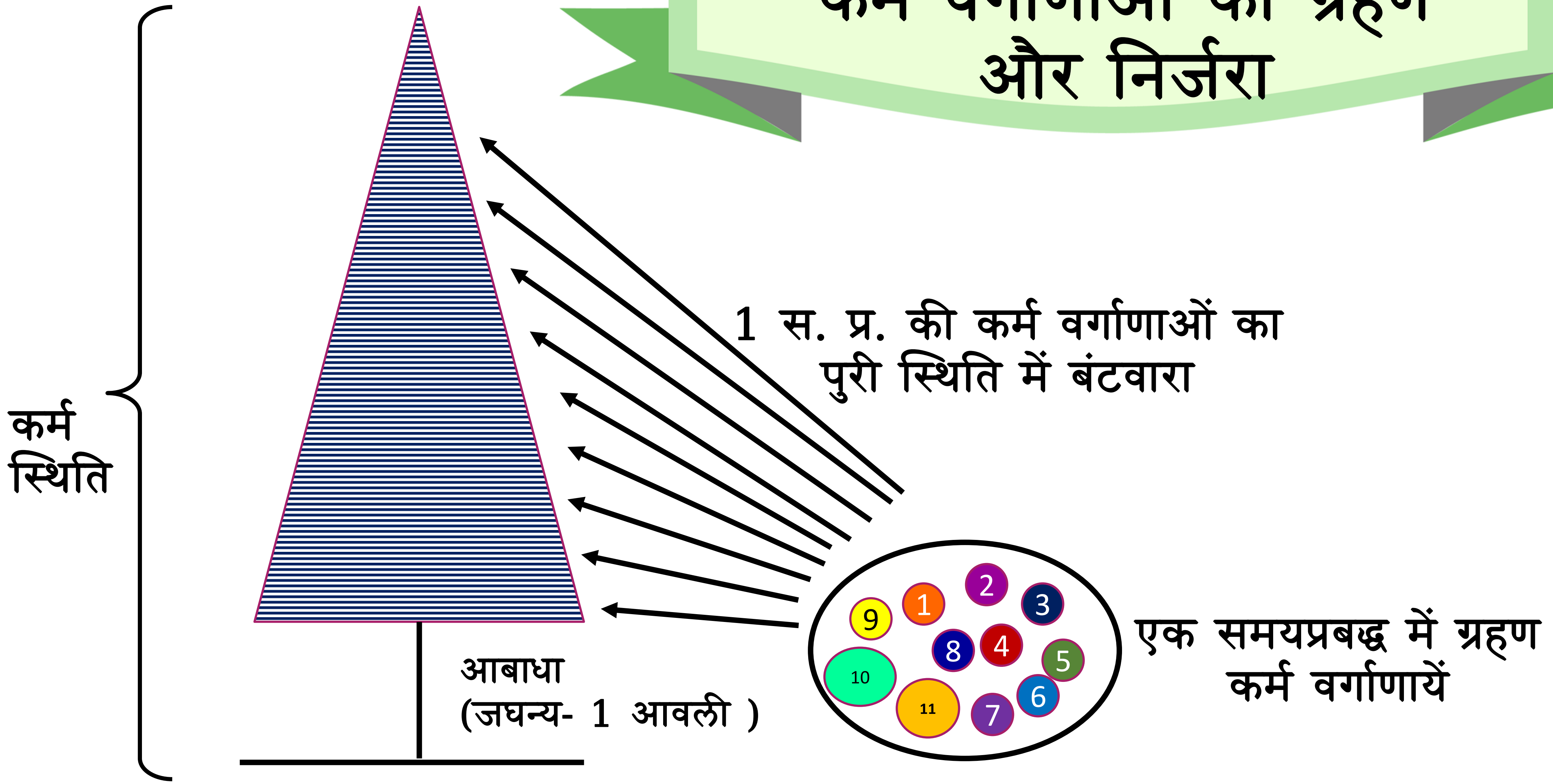

द्रव्य परिवर्तन का काल

पद	प्रमाण	गुणकार
1. अगृहीत ग्रहण का काल	अनंत	स्तोक (अल्प)
2. मिश्र ग्रहण का काल	अनंत	अनंत गुणा
3. गृहीत ग्रहण का जघन्य काल	अनंत	अनंत गुणा
4. पुद्गल परिवर्तन का जघन्य काल	अनंत	कुछ अधिक
5. गृहीत ग्रहण का उत्कृष्ट काल	अनंत	अनंत गुणा
6. पुद्गल परिवर्तन का उत्कृष्ट काल	अनंत	कुछ अधिक

क्षेत्र परिवर्तन

स्वक्षेत्र परिवर्तन

- अवगाहना के जघन्य प्रकार से उत्कृष्ट प्रकार तक समस्त अवगाहनाओं को क्रमपूर्वक धारण करने का काल ।

परक्षेत्र परिवर्तन

- लोकाकाश के समस्त प्रदेशों पर क्रमपूर्वक जन्म धारण करने का काल ।

स्वक्षेत्र परिवर्तन

कोई जीव सबसे जघन्य अवगाहना को प्राप्त करके जन्मा ।

फिर वहा आयु को पूर्ण करके मरा ।

फिर एक प्रदेश अधिक अवगाहना प्राप्त करके जन्मा ।

वहा आयु पूर्ण करके मरा ।

पुनः एक प्रदेश और अधिक अवगाहना प्राप्त करके जन्मा ।

इस प्रकार क्रम से एक-एक प्रदेश अधिक बढ़ाते हुए उत्कृष्ट अवगाहना प्राप्त करता है तब स्वक्षेत्र परिवर्तन पूर्ण होता है ।

जघन्य अवगाहना किसकी होती है?

सूक्ष्म निगोदिया लब्ध्यपर्याप्तक की

कब होती है ?		कितनी ?
ऋजु गति से जन्म लेने पर	जन्म के तीसरे समय में	$\frac{\text{घनांगुल}}{\text{असंख्यात}}$ प्रमाण

उत्कृष्ट अवगाहना किसकी होती है?

स्वयंभूरमण समुद्र में पाए जाने वाले महामत्स्य की

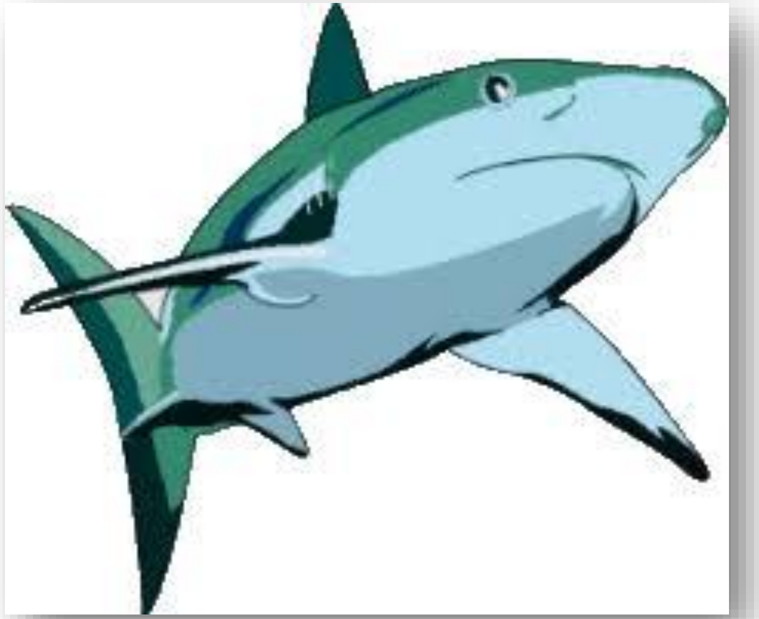

कितनी ?

1000 योजन × 500 योजन × 250 योजन

= 12,50,00,000 योजन^3

अवगाहनाओं के प्रकार

(उत्कृष्ट अवगाहना — जघन्य अवगाहना) + 1

12,50,00,000 योजन^3 — $\frac{\text{घ}}{\text{अ}}$ + 1

अर्थात् मध्यम असंख्यातासंख्यात प्रकार

ऐसी प्रत्येक अवगाहना को क्रम से धारण करना है ।

बीच में अन्य अवगाहना धारण करेगा, वह गिनती में नहीं है ।

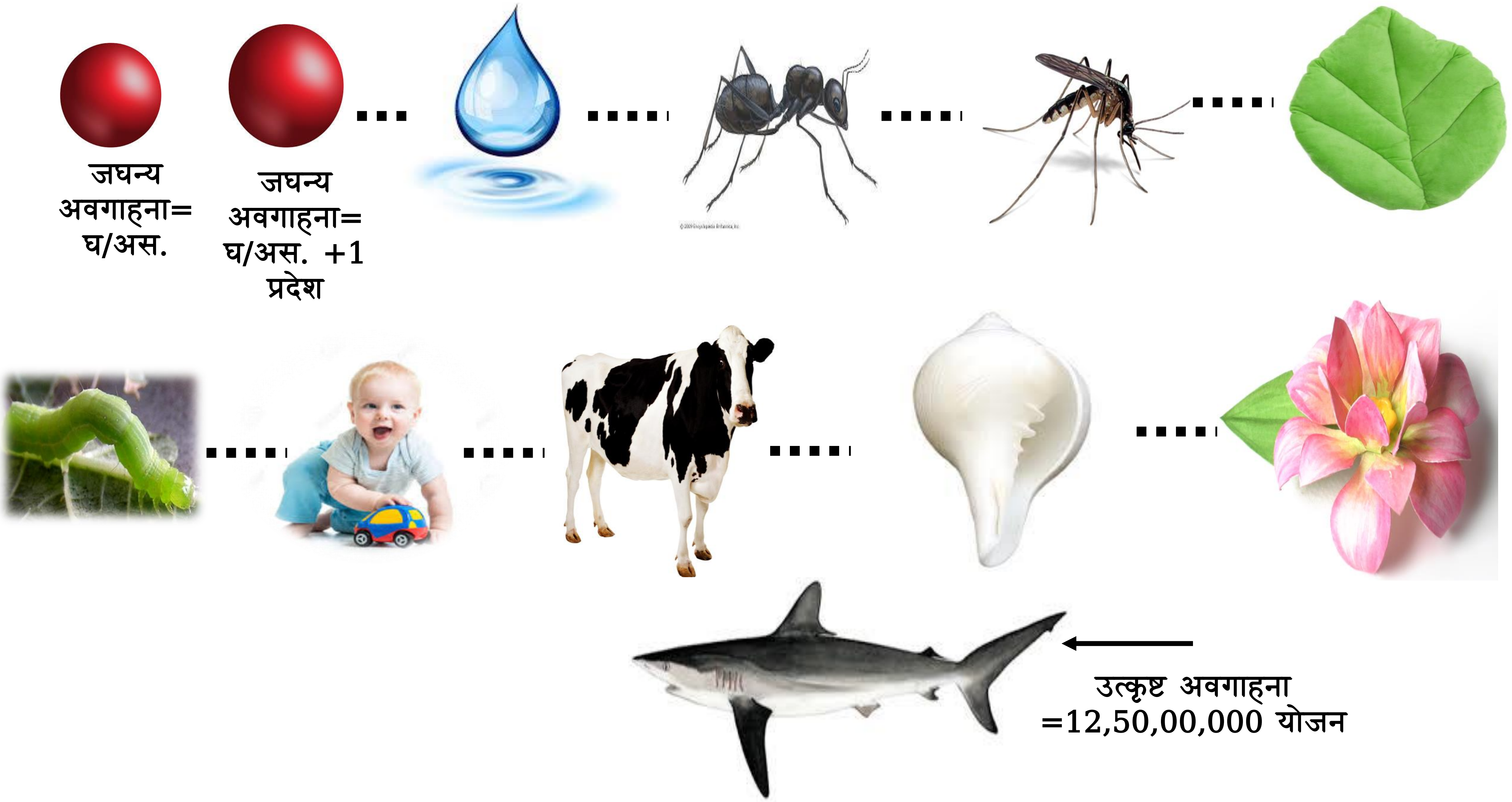
जघन्य अवगाहना= घ/अस.
जघन्य अवगाहना= घ/अस. +1 प्रदेश
उत्कृष्ट अवगाहना =12,50,00,000 योजन

ऐसा स्वक्षेत्र परिवर्तन कब पूर्ण होगा ?

अनंत काल में

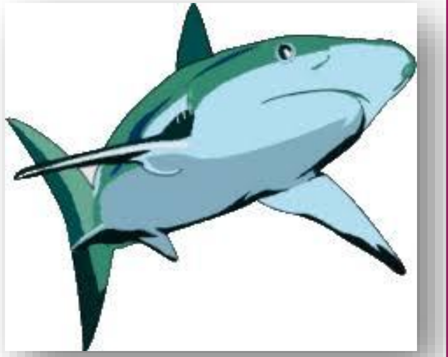

ऐसी कोई अवगाहना नहीं है जिसे इस जीव ने प्राप्त नहीं किया है ।

चौंसठ अवगाहनाओं का यन्त्र

(गाथा ९७ से गाथा १०१)

1 सूक्ष्म निगोद १ वात २ तेज ३ अप् ४ पृथ्वी ५ अपर्याप्त जघन्य	2 बादर वात ६ तेज ७ अप् ८ पृथ्वी ९ निगोद १० प्र. प्रत्येक ११ अपर्याप्त जघन्य	3 अप्र. प्रत्येक १२ द्वीन्द्रिय १३ त्रीन्द्रिय १४ चतुरिन्द्रिय १५ पंचेन्द्रिय १६ अपर्याप्त जघन्य	4 सूक्ष्म निगोद १७ वात २० तेज २३ अप् २६ पृथ्वी २९ पर्याप्त जघन्य	7 बादर वात ३२ तेज ३५ अप् ३८ पृथ्वी ४१ निगोद ४४ प्र. प्रत्येक ४७ पर्याप्त जघन्य	10 अप्र. प्रत्येक ५० द्वीन्द्रिय ५१ त्रीन्द्रिय ५२ चतुरिन्द्रिय ५३ पंचेन्द्रिय ५४ पर्याप्त जघन्य	11 त्रीन्द्रिय ५५ चतुरिन्द्रिय ५६ द्वीन्द्रिय ५७ अप्र. प्रत्येक ५८ पंचेन्द्रिय ५९ अपर्याप्त उत्कृष्ट	12 त्रीन्द्रिय ६० चतुरिन्द्रिय ६१ द्वीन्द्रिय ६२ अप्र. प्रत्येक ६३ पंचेन्द्रिय ६४ पर्याप्त उत्कृष्ट
			5 सूक्ष्म निगोद १८ वात २१ तेज २४ अप् २७ पृथ्वी ३० अपर्याप्त उत्कृष्ट	8 बादर वात ३३ तेज ३६ अप् ३९ पृथ्वी ४२ निगोद ४५ प्रति.प्रत्येक ४८ अपर्याप्त उत्कृष्ट			
			6 सूक्ष्म निगोद १९ वात २२ तेज २५ अप् २८ पृथ्वी ३१ पर्याप्त उत्कृष्ट	9 बादर वात ३४ तेज ३७ अप् ४० पृथ्वी ४३ निगोद ४६ प्रति.प्रत्येक ४९ पर्याप्त उत्कृष्ट			

परक्षेत्र परिवर्तन

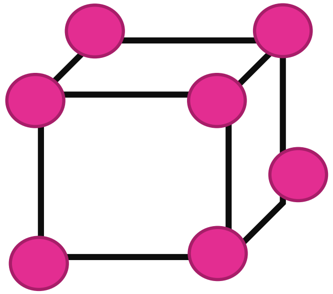

जघन्य अवगाहना का धारक जीव

लोकाकाश के मध्य के आठ प्रदेशों पर

अपने शरीर की अवगाहना के मध्यवर्ती आठ प्रदेशों को रखकर जन्मा ।

फिर आयु पूर्ण करके मरा ।

पुनः उसी प्रकार से दूसरी बार जन्मा ।

पुनः उसी प्रकार से तीसरी बार जन्मा ।

इस प्रकार से जघन्य अवगाहना के जितने प्रदेश हैं, उतनी बार तो ऐसे ही जन्म धारण किया ।

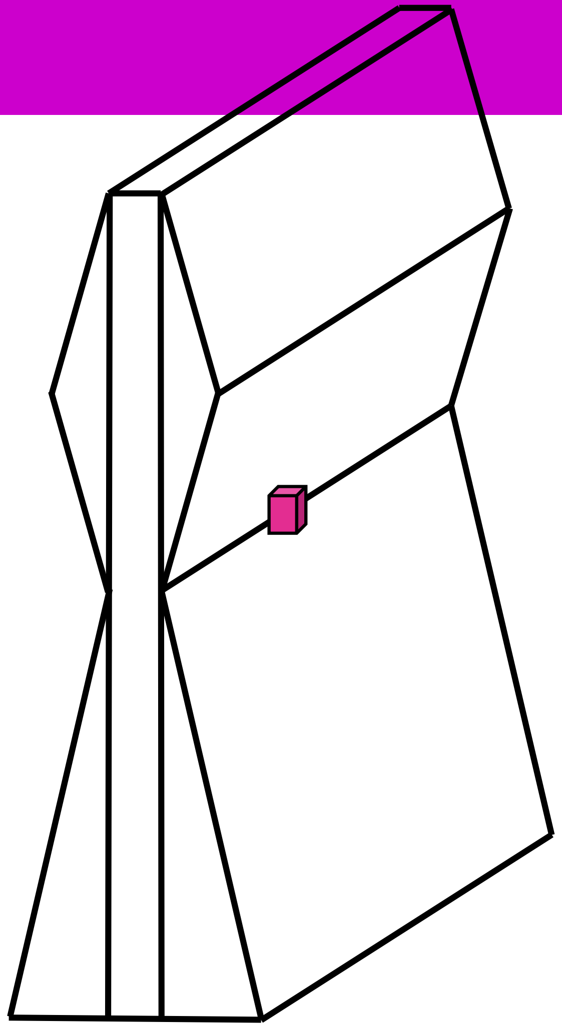

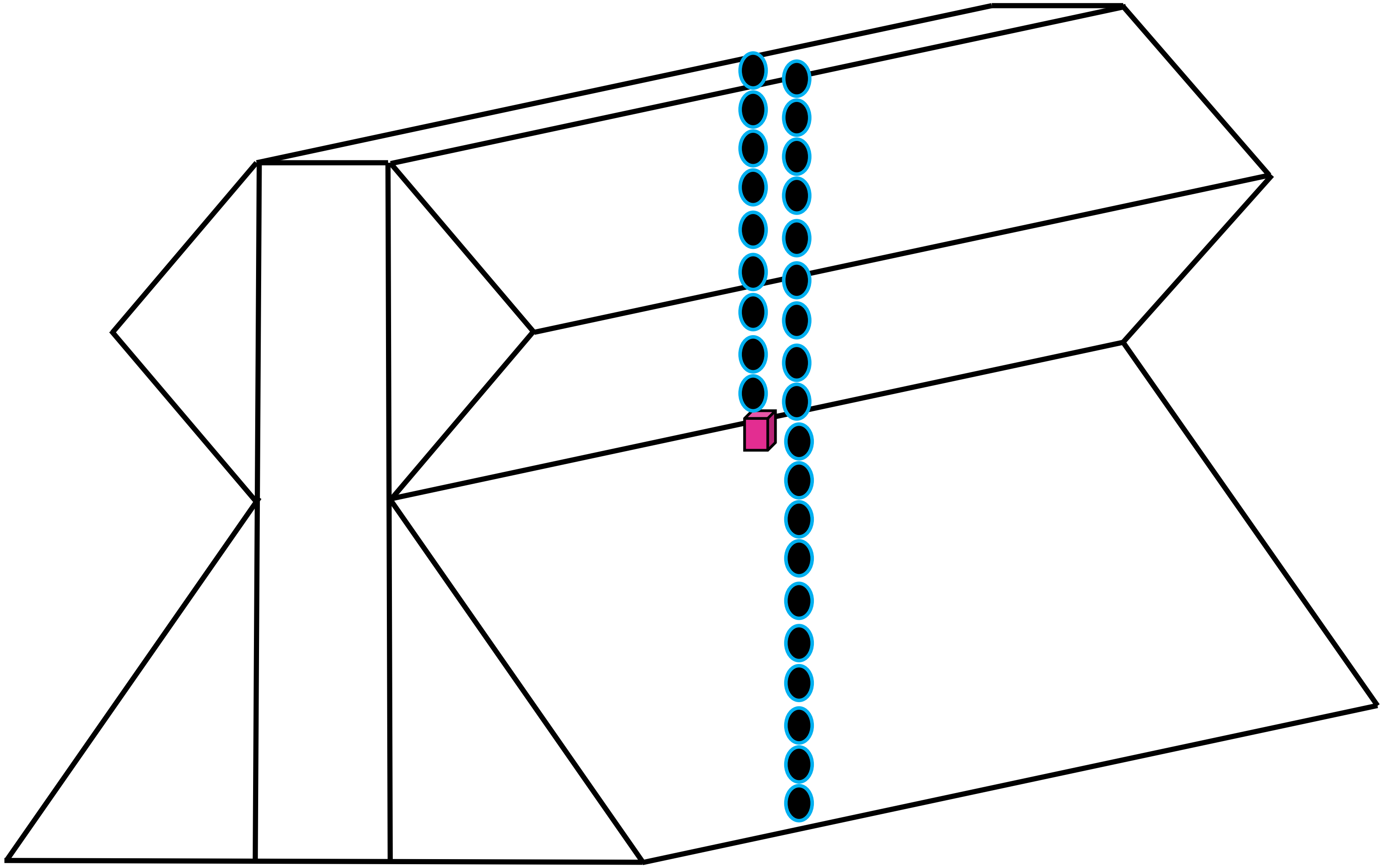

विशेष

- 1 राजू = असंख्यात योजन
- 1 योजन =12 कि. मी.
- फिर प्रमाण योजन लाने के लिए 12 कि. मी.*500 = 6000 कि. मी.
- 1 योजन = 6000 कि.मी
- 1 योजन =768,000 सूची अंगुल
- 1 सूची अंगुल में समय= असंख्यातासंख्यात कल्पकाल

तीन लोक की रचना (नक्शा)

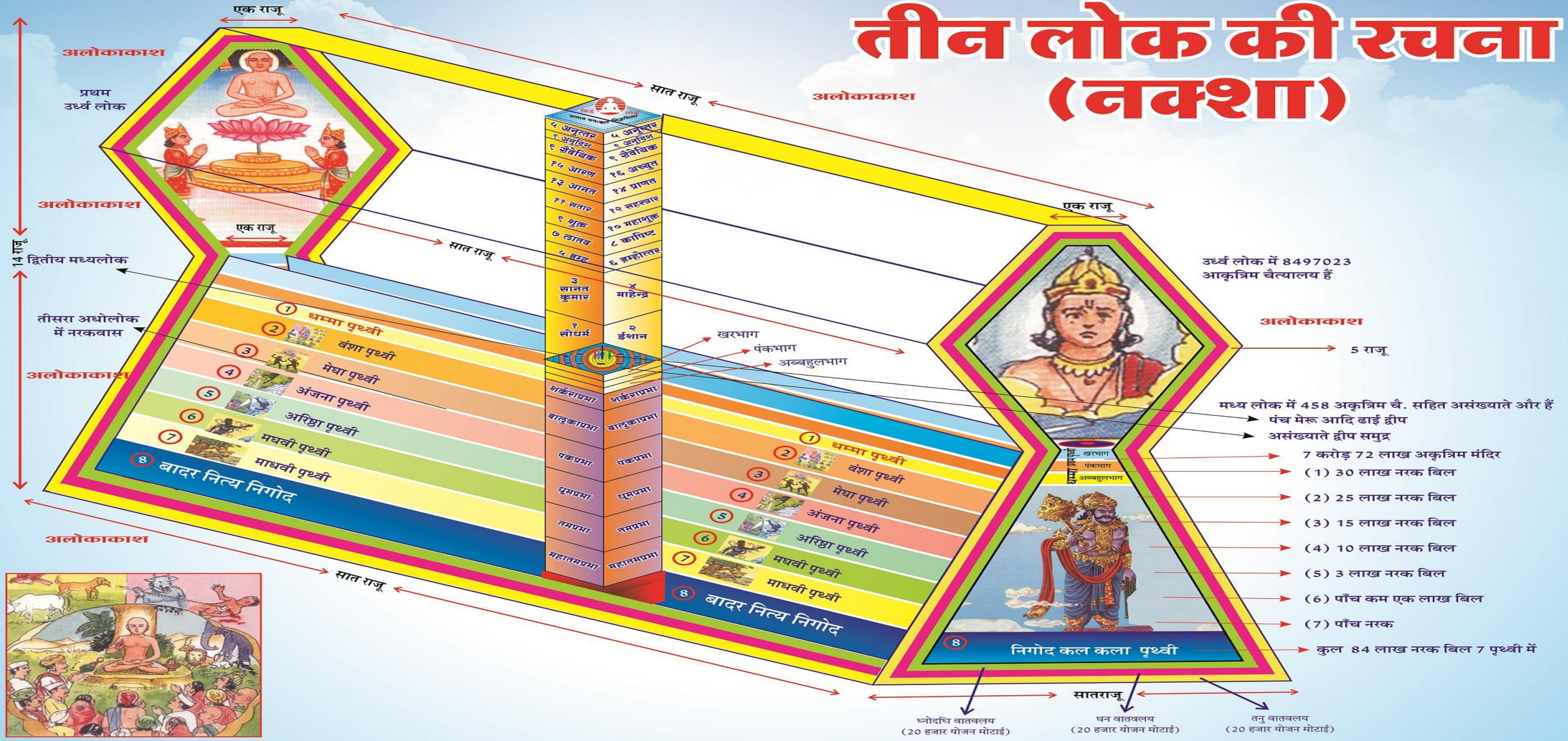

तीन लोक की रचना इस प्रकार है – मध्य लोक जो कि एक राजू विस्तार वाला है जिसमें अंसख्याते द्वीप समुद्र हैं उसके ठीक मध्य में 45 लाख योजन का अढाई द्वीप है उसके मध्य में एक लाख योजन का जम्बू द्वीप है जिसके दक्षिण दिशा में अपना भरत क्षेत्र है जिसमें हम सभी लोग रहते हैं जम्बू द्वीप में सुदर्शन मेरू भी स्थित है इसकी उँचाई एक लाख योजन है इतना ही उँचा मध्य लोक कहलाता है सुदर्शन मेरू की चोटी के बाद बाल के अग्र भाग के बाद स्वर्गलोक प्रारम्भ हो जाता है। 16 स्वर्ग के ब ाद नौ ग्रैवयक उसके उपर नौ अनुदिश हैं उसके उपर पंच अनुत्तर हैं उसके उपर जाकर सिद्धशिला है। बाद में तनुवात वलय में सिद्धालय है जहां सभी सिद्ध भगवान विराजते हैं नीचे अधोकलोक में रत्नप्रभा आदि सात पृथ्वीयां हैं जो कि उँचाई के हिसाब से छ : राजू में समा जाती है उसके नीचे एक राजू उँचाई सात राजू चौड़ाई विस्तार वाला नित्य निगोद है जिसको को कलकला पृथ्वी कहते हैं सातों पृथ्वीयों में 84 लाख नरकवास बिल हैं। जिसमें असंख्याते नारकीय रहते हैं। यह पूरा लोकाकाश 343 घन राजू का जहाँ समस्त जगह पाँचों स्तावर एक इंद्रिय जीव राशि लवालव–ठसाठस भरी हुई है। लोकाकास के बाहर अलोकाश अनंत राजू है। तीन लोक में निगोद जीव राशि अनंत है और सिद्ध जीव राशि अनंत है बांकी की एक इंद्रिय से पाँच इंद्रिय तक समस्त जीव राशि असंख्यात ही होती है।

करणानुयोग विशेष निर्देशक –
पं. विनोद जैन
सनमाईका एम्पोरियम
बी.जी.रोड, गुना (म.प्र.)
07542–224420

परक्षेत्र परिवर्तन

उसके पश्चात् निकटवर्ती एक आकाश प्रदेश को अवगाहन कर जन्मा ।

फिर उसके निकटवर्ती आकाश प्रदेश पर जन्मा ।

ऐसे क्रम से एक-एक प्रदेश आगे बढ़ता हुआ लोकाकाश के सर्व प्रदेशों पर जन्म ले

तब परक्षेत्र परिवर्तन पूर्ण होता है ।

प्रारंभ का क्षेत्र जघन्य अवगाहना वाले शरीर से लिया है ।

आगे के क्षेत्र पर उत्पत्ति अलग प्रकार की पर्याय में भी हो सकती है ।

ऐसे परक्षेत्र परिवर्तन में कितना समय लगता है ?

अनंत काल

स्वक्षेत्र + परक्षेत्र = क्षेत्र परिवर्तन

एक क्षेत्र परिवर्तन में अनंत द्रव्य परिवर्तन हो जाते हैं ।

ऐसा लोक का कोई क्षेत्र नहीं है, जहा जीव का जन्म ना हुआ हो ।

प्रश्न

- स्वक्षेत्र में किये जानेवाले कार्य अधिक हैं या परक्षेत्र में किये जाने वाले कार्य ?
- लोक के प्रदेश अधिक हैं या अवगाहनाओं के प्रकार ?

काल परिवर्तन

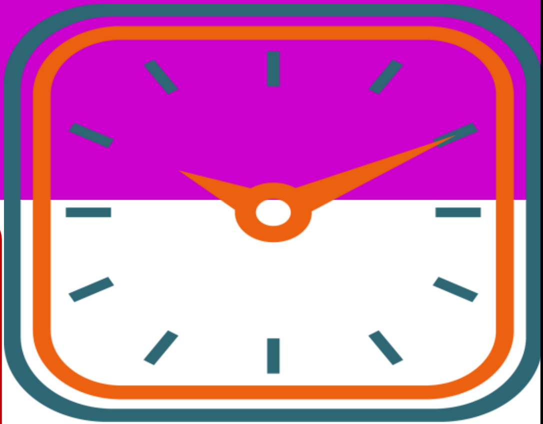

उत्सर्पिणी एवं अवसर्पिणी के समस्त समयों में

क्रम-क्रम से जन्म धारण करना,

फिर मरण प्राप्त करना

— इस समस्त काल को काल परिवर्तन कहते हैं ।

उत्सर्पिणी काल परिवर्तन

कोई जीव उत्सर्पिणी काल के पहले समय उत्पन्न हुआ ।

फिर उत्सर्पिणी काल के दूसरे समय में उत्पन्न हुआ ।

फिर उत्सर्पिणी के तृतीय समय जन्म ले ।

ऐसे उत्सर्पिणी के सारे 10 कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण समयों में क्रम से जन्म लेवे ।

प्रश्न: पहले समय से दूसरे समय में जन्म लेने के लिए कम से कम भी कितना समय लगेगा ?

उत्सर्पिणी के 10 कोड़ाकोड़ी सागर + अवसर्पिणी के 10 कोड़ाकोड़ी सागर = 1 कल्पकाल

इतना समय तो उस उत्सर्पिणी के दूसरे समय को आने में लगेगा ।

उस समय के आने पर उसी समय उस जीव का नवीन जन्म धारण करने पर काल परिवर्तन आगे बढ़ेगा ।

प्रश्न - कौन-सी गति का भव धारण करना होगा ? निगोदिया या तिर्यंच या मनुष्य आदि ।

उत्तर - गति कोई-सी भी हो, उसकी विवक्षा काल परिवर्तन में नहीं है । उस विशिष्ट समय जन्मने की विवक्षा है ।

अवसर्पिणी काल परिवर्तन

जैसे उत्सर्पिणी के सारे समयों में जन्म लिया, उसी प्रकार अवसर्पिणी के प्रथम समय जन्मा ।

फिर अवसर्पिणी के द्वितीय समय में जन्मा ।

ऐसे 10 कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण अवसर्पिणी के सर्व कालों में क्रम से जन्म लिया ।

बीच में अक्रम से जो जन्म धारण किए, उनकी गिनती नहीं है, परन्तु समय गिनने में आता है ।

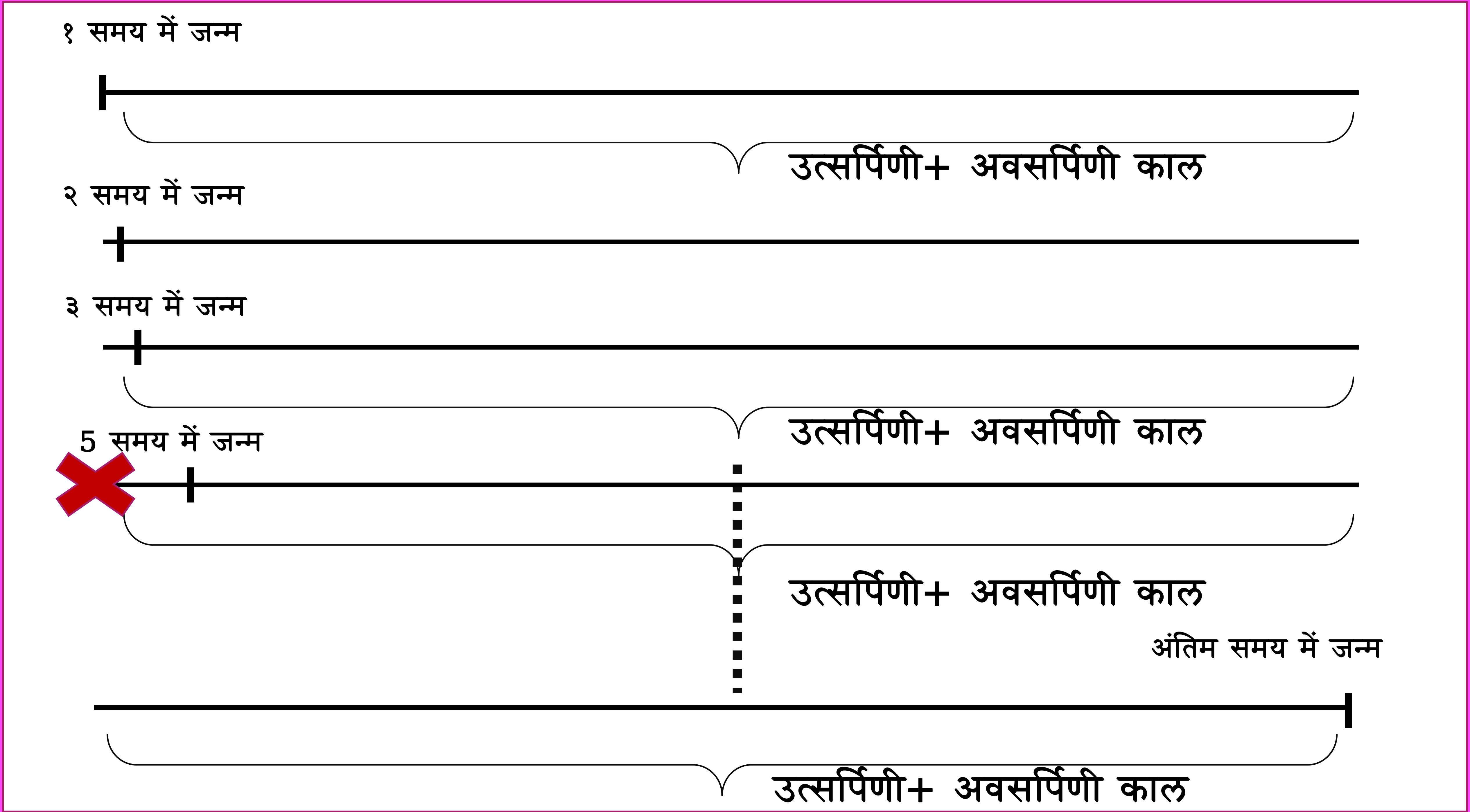
१ समय में जन्म
उत्सर्पिणी+ अवसर्पिणी काल
२ समय में जन्म
३ समय में जन्म
उत्सर्पिणी+ अवसर्पिणी काल
5 समय में जन्म
उत्सर्पिणी+ अवसर्पिणी काल
अंतिम समय में जन्म
उत्सर्पिणी+ अवसर्पिणी काल

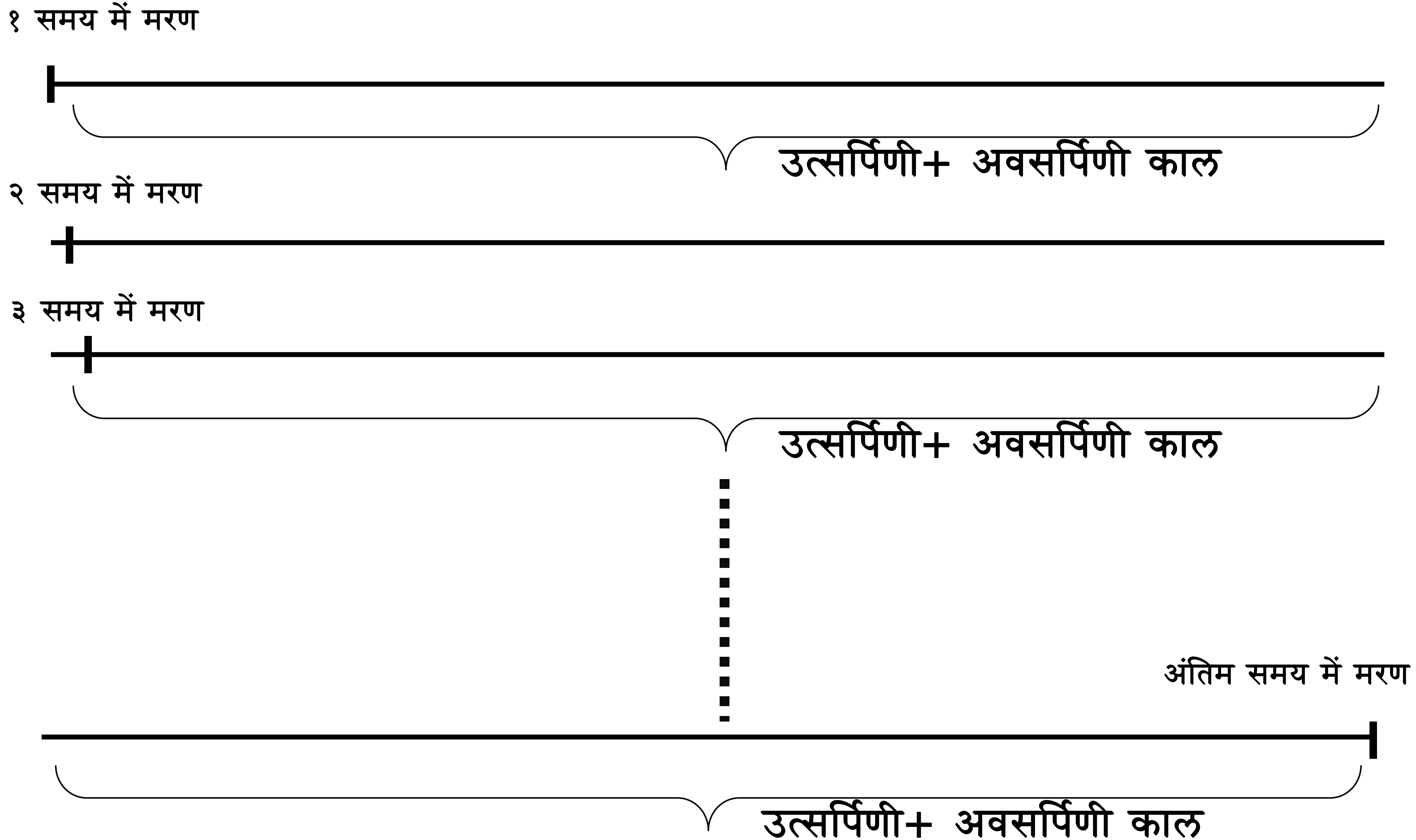
१ समय में मरण
उत्सर्पिणी+ अवसर्पिणी काल
२ समय में मरण
३ समय में मरण
उत्सर्पिणी+ अवसर्पिणी काल
अंतिम समय में मरण
उत्सर्पिणी+ अवसर्पिणी काल

काल परिवर्तन

जन्म धारण कर लेने के पश्चात् क्रम से मरण करे ।

याने उत्सर्पिणी के प्रथम समय में मरण किया,

फिर उत्सर्पिणी के द्वितीय समय में मरण किया,

फिर उत्सर्पिणी के तृतीय समय में मरण किया,

ऐसे उत्सर्पिणी के सम्पूर्ण समयों में क्रम से मरण किया ।

उसके पश्चात् अवसर्पिणी के सर्व समयों में क्रम से मरण किया ।

तब एक काल परिवर्तन पूरा होता है ।

काल परिवर्तन का कितना काल है ?

अनंत काल

एक काल परिवर्तन में अनंत क्षेत्र परिवर्तन पूरे हो जाते हैं।

अथवा एक काल परिवर्तन के अनंतवे भाग में एक क्षेत्र परिवर्तन पूरा हो जाता है ।

उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी का
ऐसा कोई समय नहीं

जिसमें जीव ने जन्म
और मरण न किया हो ।

प्रश्न - क्षेत्र परिवर्तन में जितने काम करने हैं, उससे काल परिवर्तन में जितने काम करने हैं, वे अधिक हैं या कम ?

प्रश्न - जहा काल का परिवर्तन नहीं है, वहा कैसे काल परिवर्तन होगा ?

भव परिवर्तन

नरक

तिर्यंच

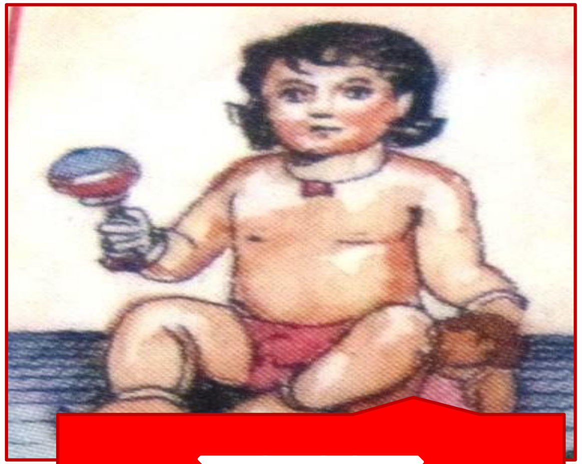

मनुष्य

देव

के समस्त भवों को

क्रम से धारण करना

भव परिवर्तन कहलाता है ।

किसकी कितनी आयु ?

नरक और देव

जघन्य	उत्कृष्ट
10,000 वर्ष	33 सागर

नरक भव परिवर्तन

कोई जीव नरक गति में जघन्य आयु 10000 वर्ष की धारण करके उत्पन्न हुआ ।

फिर पुनः परिभ्रमण करता हुआ दूसरी बार जघन्य आयु धारण करके उत्पन्न हुआ ।

फिर पुनः परिभ्रमण करता हुआ तीसरी बार जघन्य आयु धारण करके उत्पन्न हुआ ।

ऐसे 10000 वर्ष के जितने समय हैं, उतनी बार पुनः-पुनः जघन्य आयु धारण करके नरक में उत्पन्न हुआ ।

प्रश्न - एक बार नारकी बनकर कितने समय बाद नारकी बनेगा ?

उत्तर - नरक से निकलकर मनुष्य या तिर्यंच में अंतर्मुहूर्त रहकर पुनः नरक में उत्पन्न हो सकता है ।

प्रश्न - तो क्या एक त्रस स्थिति में ही सारे नरक भव पूरे हो जायेंगे?

उ. नहीं भाई ! जघन्य आयु को ही असंख्यातों बार धारण करना है और

एक त्रस स्थिति में असंख्यात बार नरक चला भी जाए, तो भी हर बार 10000 वर्ष की ही आयु प्राप्त करना संभव नहीं है ।

और एक त्रस स्थिति पूर्ण करके एकेन्द्रिय में गया, तब उत्कृष्टपने असंख्यात पुद्गल परिवर्तन तक तो नारकी बनने का अवसर ही नहीं आना है ।

नरक भव प्राप्त होने पर भी जघन्य आयु वाला नारकी बनना दुर्लभ है । अतः इस प्रथम चक्र को करने में ही अनंत काल लग जायेगा ।

नरक भव परिवर्तन

इसके बाद 10000 वर्ष + 1 समय की आयु धारण कर नरक में उत्पन्न हो,

फिर 10000 वर्ष + 2 समय की आयु धारण कर नरक में उत्पन्न हो,

फिर 10000 वर्ष + 3 समय की आयु धारण कर नरक में उत्पन्न हो,

ऐसे उत्कृष्ट 33 सागर आयु धारण कर नरक में उत्पन्न हो। तब नरक भव परिवर्तन पूर्ण होता है।

बीच में अन्यत्र भव धारण किए, उनकी तो कोई गिनती ही नहीं। पर काल की गिनती भव परिवर्तन में होगी।

तिर्यंच और मनुष्य आयु

जघन्य	उत्कृष्ट
अन्तर्मुहूर्त	3 पल्य

तिर्यंच भव परिवर्तन

वही जीव फिर तिर्यंचगति में जघन्य आयु अंतर्मुहूर्त प्रमाण धारण करके जन्मा ।

फिर तिर्यंच गति में ही जघन्य आयु धारण कर दूसरी बार जन्मा ।

फिर तिर्यंच गति में ही जघन्य आयु धारण कर तीसरी बार जन्मा ।

ऐसे तिर्यंच गति में ही जघन्य आयु प्रमाण अंतर्मुहूर्त के जितने समय हैं, उतनी बार जघन्य आयु धारण करके जन्मा ।

तिर्यंच भव परिवर्तन

फिर जघन्य आयु + 1 समय की आयु धारण कर जन्मा ।

फिर जघन्य आयु + 2 समय की आयु धारण कर जन्मा ।

ऐसे क्रम से एक-एक समय बढ़ाते हुए तिर्यंचों की उत्कृष्ट 3 पल्य आयु धारण कर जन्मा ।

बीच-बीच में अन्य भव धारण किए, वे गिनती में नहीं हैं ।

तिर्यंच के भी भव बिना अनुक्रम वाले धारण किए, वे भी गिनती में नहीं हैं ।

परन्तु काल सारा गिना जाएगा ।

यह सब मिलकर एक तिर्यंच भव परिवर्तन होता है ।

तिर्यंचों की आयु

जीव	उत्कृष्ट आयु	जीव	उत्कृष्ट आयु
मृदु (शुद्ध) पृथ्वीकायिक	12,000 वर्ष	तीन इन्द्रिय	49 दिन
कठोर पृथ्वीकायिक	22,000 वर्ष	चार इन्द्रिय	6 मास
जलकायिक	7,000 वर्ष	पंचेन्द्रिय जलचर	1 कोटि पूर्व
वायुकायिक	3,000 वर्ष	सरीसर्प, रेंगने वाले पशु	9 पूर्वांग
अग्निकायिक	3 दिन	सर्प	42,000 वर्ष
वनस्पतिकायिक	10,000 वर्ष	पक्षी	72,000 वर्ष
दो इन्द्रिय	12 वर्ष	चौपाये पशु	3 पल्य

सभी की जघन्य आयु अन्तर्मुहूर्त है ।

प्रश्न - तिर्यंच भव परिवर्तन में क्रम के अनुसार कर्मभूमि के भव अधिक हैं या भोगभूमि के ?

प्रश्न - तिर्यंच भव परिवर्तन में कर्मभूमि में अधिक जन्मता है या भोगभूमि में ?

प्रश्न - तिर्यंच भव
परिवर्तन में क्रम के
अनुसार कौन-से इन्द्रिय
जीव बनना सबसे
अधिक बार होगा?

मनुष्य भव परिवर्तन

जिस प्रकार तिर्यंचों में जघन्य आयु अंतर्मुहूर्त से 3 पल्य तक क्रम से जन्म लेता है,

उसी प्रकार मनुष्यों में जघन्य आयु अंतर्मुहूर्त से 3 पल्य तक क्रम से जन्म लेता है ।

तब मनुष्य भव परिवर्तन पूर्ण होता है ।

देव भव परिवर्तन

देवों की जघन्य आयु 10000 वर्ष प्रमाण धारण कर देवों में उपजा ।

फिर पुन: 10000 वर्ष की आयु धारण कर दूसरी बार देवों में जन्मा ।

फिर पुन: 10000 वर्ष की आयु धारण कर तीसरी बार देवों में जन्मा ।

ऐसे 10000 वर्ष के जितने समय हैं, उतनी बार जघन्य आयु वाला देव बना ।

बीच में भिन्न-भिन्न प्रकार की आयु धारण करके देवों में उत्पन्न हुआ है, वह गिनती में नहीं है । उसका काल भव परिवर्तन में गिना जाएगा ।

देव भव परिवर्तन

इसके बाद 10000 वर्ष + 1 समय की आयु धारण कर जन्मा,

फिर 10000 वर्ष + 2 समय की आयु धारण कर जन्मा,

ऐसे क्रम से एक-एक समय बढ़ाते हुए 31 सागर तक की आयु धारण करके जन्मा ।

तब देव परिवर्तन पूरा होता है ।

और भव परिवर्तन भी पूरा होता है ।

प्रश्न - देवों में 33 सागर की उत्कृष्ट आयु होती है । फिर 31 सागर तक की आयु में ही क्यों उत्पन्न कराया ?

उत्तर - मिथ्यादृष्टि जीव 31 सागर की आयु तक ही उत्पन्न होते हैं । इसके ऊपर की आयु सम्यग्दृष्टि जीव ही धारण कर सकते हैं । भव परिवर्तन मिथ्यादृष्टि के ही होते हैं, सम्यग्दृष्टि के नहीं । इसलिये 31 सागर तक ही आयु ली है ।

ऐसी 31 सागर की देवों की आयु कहाँ होती है ?

नवमें ग्रैवेयक में अधिकतम आयु 31 सागर की होती है ।

इसके ऊपर 1 समय अधिक 31 सागर आदि आयु के भेद 9 अनुदिश व 5 अनुत्तर विमानों में होते हैं ।

प्रश्न - नरक भव परिवर्तन में अनुक्रम से जन्म लेने में सबसे अधिक कौन-से नरक में जन्म लेता है?

प्रश्न - नरक भव परिवर्तन में अनुक्रम से जन्म लेने में सबसे कम कौन-से नरक में जन्म लेता है?

प्रश्न - देव भव परिवर्तन में अनुक्रम से जन्म लेने में सबसे अधिक कौन-से स्वर्ग में जन्म लेता है?

प्रश्न - देव भव परिवर्तन में अनुक्रम से जन्म लेने में सबसे कम कौन-से स्वर्ग में जन्म लेता है?

भव परिवर्तन का कितना काल है ?

अनंत काल

एक भव परिवर्तन के अनंतवें भाग में काल परिवर्तन पूरा हो जाता है ।

अथवा एक भव परिवर्तन में अनंत काल परिवर्तन हो जाते हैं ।

भाव परिवर्तन

8 कर्मों के समस्त प्रकृति, स्थिति, अनुभाग, प्रदेश बंध के योग्य

जो विविध योगस्थान, कषाय-स्थान हैं,

उन सबको क्रमपूर्वक जितने काल में अनुभव करता है,

उस काल को भाव परिवर्तन कहते हैं ।

स्थिति स्थान

+

कषाय अध्यवसाय स्थान

+

अनुभाग बंध अध्यवसाय स्थान

+

योगस्थान

→ भाव परिवर्तन

भाव परिवर्तन

स्थिति स्थान

- बंधनेरूप कर्मों की स्थिति के प्रकारों को स्थिति स्थान कहते हैं । जैसे 100 वर्ष की स्थिति यह एक प्रकार हुआ, 100 वर्ष + 1 समय यह स्थिति का दूसरा प्रकार हुआ । ऐसे सारे स्थितियों के प्रकारों को स्थिति स्थान कहते हैं ।

कषाय अध्यवसाय स्थान

- इसे स्थितिबंध अध्यवसाय स्थान भी कहते हैं । जीव के जिन कषाय के परिणामों से कर्मों का स्थिति बंध होता है उसे कषाय अध्यवसाय कहते हैं । उनके समस्त प्रकारों को कषाय-अध्यवसाय स्थान कहते हैं ।

अनुभाग बंध अध्यवसाय स्थान

- जीव के जिन कषाय के परिणामों से कर्मों का अनुभाग बंध होता है, उसे अनुभाग बंध अध्यवसाय कहते हैं । उनके सर्व प्रकारों को अनुभाग-बंध अध्यवसाय स्थान कहते हैं ।

योगस्थान

- प्रकृति, प्रदेश बंध को कारणभूत जीव के प्रदेशों का परिस्पंद योग कहलाता है । ऐसे योग के समस्त प्रकारों को योगस्थान कहते हैं ।

स्थिति स्थान के प्रकार

स्थिति स्थान

- आयु को छोड़कर शेष 7 कर्मों की अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति — अंत: कोड़ाकोड़ी सागर

जैसे मिथ्यात्व कर्म के स्थिति स्थान = 70 कोड़ाकोड़ी सागर — अंत कोड़ाकोड़ी सागर अर्थात्

70 कोड़ाकोड़ी सागर = पहला स्थिति स्थान

70 कोड़ाकोड़ी सागर – 1 समय = दूसरा स्थिति स्थान

70 कोड़ाकोड़ी सागर – 2 समय = तीसरा स्थिति स्थान

ऐसे 1-1 समय कम करते हुए जघन्य स्थिति के प्रकार तक जाना। इन सबका समूह मिथ्यात्व के स्थिति स्थान हैं

ऐसे ही प्रत्येक कर्म के ऊपर लगाना।

आयु कर्म के स्थिति स्थान 33 सागर के जितने समय हैं, उनसे कुछ कम हैं।

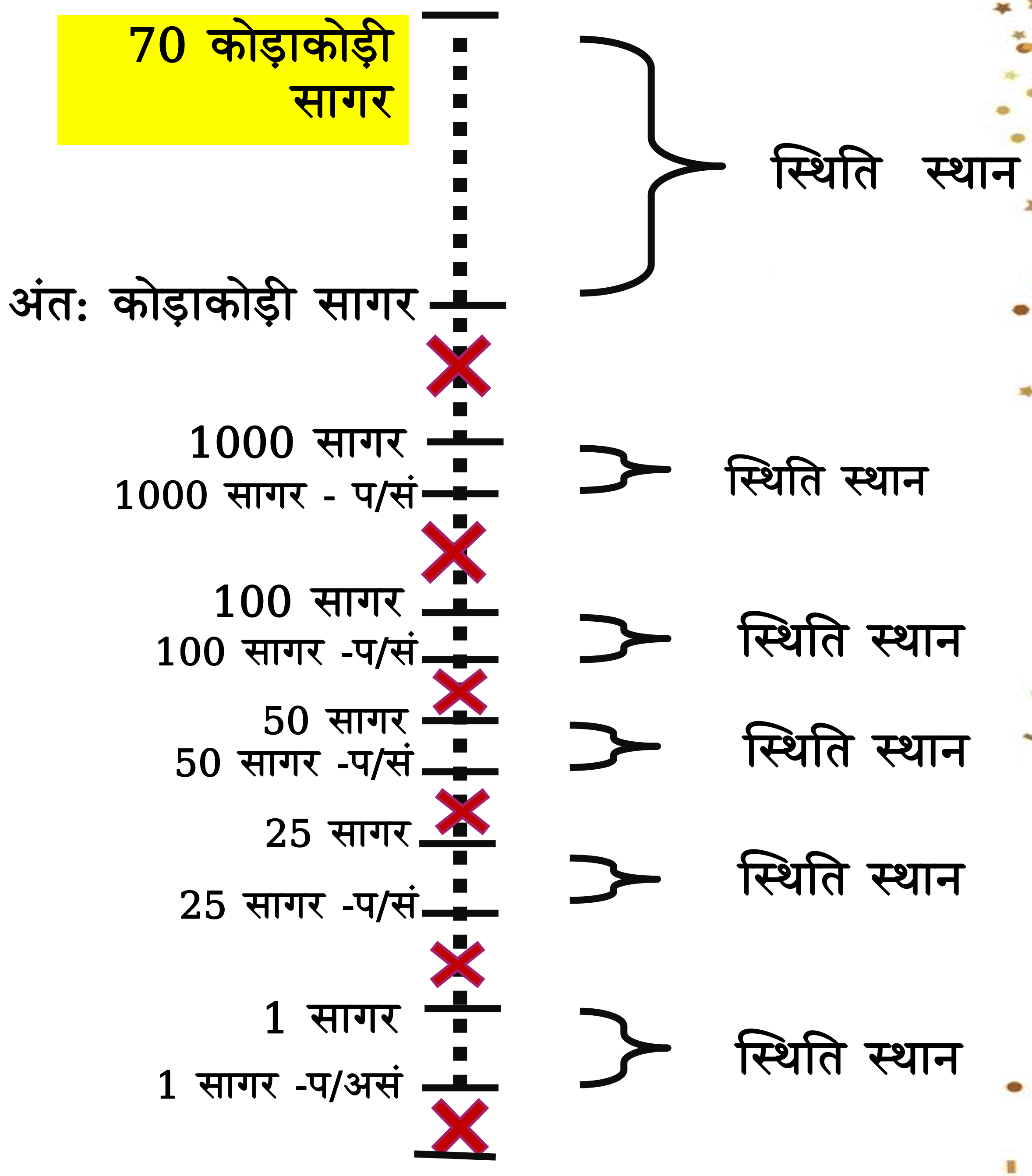
70 कोड़ाकोड़ी सागर
स्थिति स्थान
अंत: कोड़ाकोड़ी सागर
1000 सागर
1000 सागर - प/सं
स्थिति स्थान
100 सागर
100 सागर -प/सं
स्थिति स्थान
50 सागर
50 सागर -प/सं
स्थिति स्थान
25 सागर
25 सागर -प/सं
स्थिति स्थान
1 सागर
1 सागर -प/असं
स्थिति स्थान

भिन्न भिन्न जीवों का उत्कृष्ट स्थितिबंध

शेष जीवों का उत्कृष्ट कर्म स्थिति बंध

	मोहनीय	ज्ञानावरणादि 5	नाम गोत्र	आयु
एकेन्द्रिय	1 सागर	3/7 सागर	2/7 सागर	1 कोटी पूर्व
द्वीन्द्रिय	25 सागर	25X3/7 सागर	25X2/7 सागर	
त्रीन्द्रिय	50 सागर	50X3/7 सागर	50X2/7 सागर	
चौइन्द्रिय	100 सागर	100X3/7 सागर	100X2/7 सागर	
असैनी पंचेन्द्रिय	1000 सागर	1000X3/7 सागर	1000X2/7 सागर	पल्य/असंख्यात

8 कर्म स्थिति

ज्ञानावरण 5	• 30 कोड़ा-कोड़ी सागर
दर्शनावरण 9	• 30 कोड़ा-कोड़ी सागर
अंतराय 5	• 30 कोड़ा-कोड़ी सागर
दर्शन मोहनीय	• 70 कोड़ा-कोड़ी सागर
16 कषाय	• 40 कोड़ा-कोड़ी सागर
अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसक वेद	• 20 कोड़ा-कोड़ी सागर
स्त्री वेद	• 15 कोड़ा-कोड़ी सागर
हास्य, रति, पुरुषवेद	• 10 कोड़ा-कोड़ी सागर

8 कर्म स्थिति

असाता वेदनीय	• 30 कोड़ा-कोड़ी सागर
साता वेदनीय	• 15 कोड़ा-कोड़ी सागर
देवायु, नारकायु	• 33 सागर
मनुष्यायु, तिर्यञ्चायु	• 3 पल्य
नीच गोत्र	• 20
उच्च गोत्र	• 10

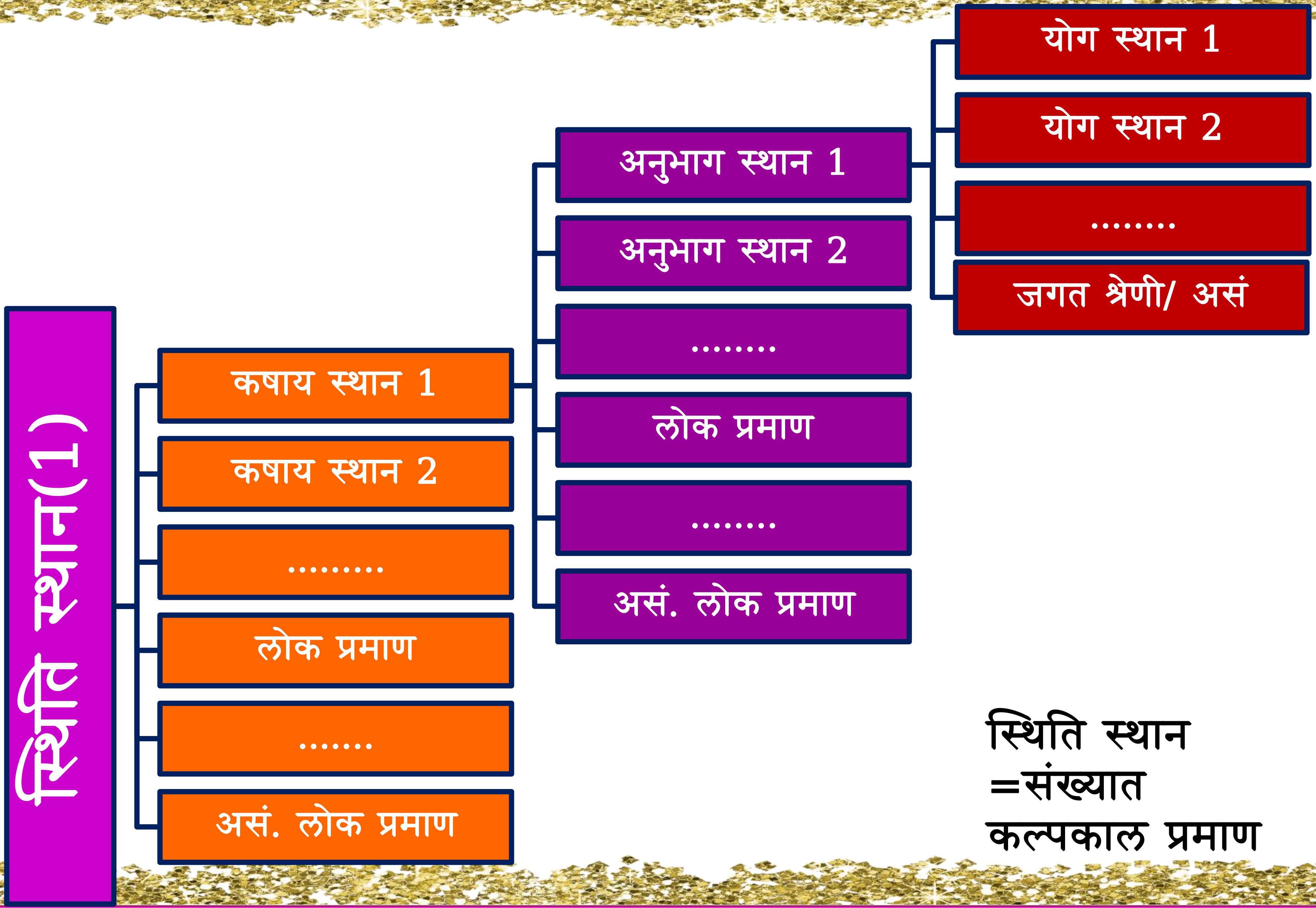

स्थिति स्थान
=संख्यात
कल्पकाल प्रमाण

बंध-अध्यवसाय-स्थान आदि के प्रकार

स्थिति बंध अध्यवसाय स्थान

- प्रत्येक स्थिति-स्थान के बंध के लिए स्थिति-बंध अध्यवसाय स्थान की संख्या असंख्यात लोक है । सारे स्थिति स्थानों के अध्यवसायों की संख्या भी असंख्यात लोक है । $\equiv \partial$

अनुभाग बंध अध्यवसाय स्थान

- एक-एक स्थिति में अनेकों प्रकार के अनुभाग संभव हैं । उन अनुभाग बंध को करने वाले अनुभाग -अध्यवसाय के प्रकार असंख्यात लोक प्रमाण हैं । ऐसे सारे अनुभागों को बांधने वाले परिणामों की संख्या भी असंख्यात लोक है । $\equiv \partial \equiv \partial$

योगस्थान

- $\frac{\text{जगत्श्रेणी}}{\text{असंख्यात}}$ प्रमाण कुल योगस्थान होते हैं । अर्थात् इतने प्रकार के आत्म परिस्पंद के प्रकार हैं ।

स्थिति स्थान आदि का अल्प-बहुत्व

पद	प्रमाण
1. स्थिति स्थान	संख्यात कल्पकाल
2. योगस्थान	$\frac{\text{श्रेणी}}{\text{असंख्यात}}$
3. स्थिति बंध अध्यवसाय स्थान	असंख्यात लोक
4. अनुभाग बंध अध्यवसाय स्थान	असंख्यात लोक × असंख्यात लोक

ज्ञानावरण कर्म के उदाहरण से अब भाव परिवर्तन को समझाते हैं–

कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव अपने योग्य ज्ञानावरण की जघन्य स्थिति अंत:कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण बांधता है ।

इस जघन्य स्थिति को बांधने हेतु स्थितिबंध अध्यवसाय स्थान असंख्यात लोक हैं । वे जघन्य से उत्कृष्ट तक षट्स्थान वृद्धियों को लिए हैं ।

इनमें जघन्य स्थिति अध्यवसाय स्थान संबंधी अनुभाग बंध अध्यवसाय स्थान भी असंख्यात लोक हैं । वे भी जघन्य से उत्कृष्ट तक षट्स्थान वृद्धियों को लिए हैं ।

इनमें से जघन्य अनुभाग अध्यवसाय संबंधी योगस्थान $\frac{\text{श्रेणी}}{\text{असंख्यात}}$ प्रमाण हैं ।

वहा सर्वप्रथम जघन्य स्थिति को जघन्य स्थितिबंध अध्यवसाय और जघन्य अनुभाग बंध अध्यवसाय स्थान से युक्त जघन्य योगस्थान से बंध करता है ।

फिर जघन्य स्थिति को उसी स्थिति अध्यवसाय से, उसी अनुभाग अध्यवसाय से परन्तु द्वितीय योगस्थान से बांधता है ।

ऐसे अनुक्रम से $\frac{\text{श्रेणी}}{\text{असंख्यात}}$ योगस्थानों से बांधता है ।

बीच-बीच में अन्य स्थिति बंध किया, अन्य स्थितिबंध अध्यवसाय, अनुभाग अध्यवसाय या योगस्थान हुआ, वह गिनती में नहीं है, परन्तु काल गिना जायेगा ।

उदाहरण

स्थिति स्थान — 100 वर्ष से 100 वर्ष 10 समय तक के हैं ।

प्रत्येक स्थान के लिए स्थिति अध्यवसाय स्थान 50 हैं ।

प्रत्येक स्थिति अध्यवसाय हेतु अनुभाग अध्यवसाय स्थान 100 हैं ।

प्रत्येक अनुभाग अध्यवसाय स्थान हेतु योगस्थान 20 हैं ।

तब कोई जीव इस प्रकार बंध करे —

स्थिति स्थान	स्थिति अध्यवसाय स्थान	अनुभाग अध्यवसाय स्थान	योगस्थान
100 वर्ष	1 (जघन्य)	1 (जघन्य)	1
100 वर्ष	1 (जघन्य)	1 (जघन्य)	2
100 वर्ष	1 (जघन्य)	1 (जघन्य)	3
100 वर्ष	1 (जघन्य)	1 (जघन्य)	.....
100 वर्ष	1 (जघन्य)	1 (जघन्य)	20

जब क्रम से जघन्य स्थिति, जघन्य स्थिति अध्यवसाय और जघन्य अनुभाग अध्यवसाय स्थान के साथ सारे योगस्थान पूर्ण हो गए, तब

वही स्थिति स्थान, वही स्थिति अध्यवसाय स्थान, अगला अनुभाग अध्यवसाय स्थान होगा ।

एवं पुनः इसके योग्य जघन्य से उत्कृष्ट योगस्थान द्वारा बंध करता है ।

स्थिति स्थान	स्थिति अध्यवसाय स्थान	अनुभाग अध्यवसाय स्थान	योगस्थान
100 वर्ष	1 (जघन्य)	1 (जघन्य)	20
100 वर्ष	1 (जघन्य)	2	1
100 वर्ष	1 (जघन्य)	2	2
100 वर्ष	1 (जघन्य)	2	......
100 वर्ष	1 (जघन्य)	2	20

उसके पूर्ण होने के पश्चात् ऐसे ही क्रम से सारे अनुभाग अध्यवसाय स्थानों के साथ यथायोग्य सारे योगस्थानों को प्राप्त करता है ।

स्थिति स्थान	स्थिति अध्यवसाय स्थान	अनुभाग अध्यवसाय स्थान	योगस्थान
100 वर्ष	1 (जघन्य)	3	1......20
100 वर्ष	1 (जघन्य)	4	1......20
100 वर्ष	1 (जघन्य)	.....	1......20
100 वर्ष	1 (जघन्य)	100	1......20

जब सारे अनुभाग अध्यवसाय स्थान पूर्ण हो जाते हैं, तब अगले स्थिति अध्यवसाय स्थान के साथ पुनः यही प्रक्रिया दोहराना है ।

अर्थात् अगले स्थिति अध्यवसाय स्थान से प्रारंभ करके पुनः इसके योग्य सारे अनुभाग अध्यवसाय व योगस्थान के साथ बंध किया ।

ऐसा सारे स्थिति अध्यवसाय स्थानों के साथ बंध किया, तब जघन्य स्थिति स्थान का क्रम पूर्ण हुआ ।

स्थिति स्थान	स्थिति अध्यवसाय स्थान	अनुभाग अध्यवसाय स्थान	योगस्थान
100 वर्ष	1 (जघन्य)	1......100	1......20
100 वर्ष	2	1......100	1......20
100 वर्ष	3	1......100	1......20
100 वर्ष	....	1......100	1......20
100 वर्ष	50	1......100	1......20

अब इस जघन्य स्थिति से 1 समय अधिक की स्थिति के साथ पुनः यही प्रक्रिया दोहराई जायेगी ।

इसके पूर्ण होने पर 1 समय अधिक की स्थिति के साथ पुनः सारे बंध किए जायेंगे ।

ऐसे अनुक्रम से एक-एक समय बढ़ते हुए उत्कृष्ट स्थिति स्थान तक बंध किया जाता है, तब ज्ञानावरण कर्म का भाव परिवर्तन पूर्ण हुआ ।

अब अगले कर्म का भाव परिवर्तन इसी क्रम से प्रारंभ से अंत तक करना ।

ऐसे सारे कर्मों की मूल व उत्तर प्रकृतियों में अनुक्रम से भावों का परिवर्तन जानना चाहिए ।

यह काल भाव परिवर्तन कहलाता है ।

भाव परिवर्तन का कितना काल है ?

अनंत काल

भाव परिवर्तन के अनंतवें भाग में भव परिवर्तन हो जाता है ।

अथवा एक भाव परिवर्तन में अनंत भव परिवर्तन हो जाते हैं ।

प्रश्न - 8 कर्मों में से अनुक्रम से करने के कार्य सबसे अधिक और सबसे कम किस कर्म के होंगे ?

प्रश्न - एक भाव परिवर्तन का काल सक्षय अनंत है या अक्षय अनंत ?

एक जीव के भूतकाल के परिवर्तन

पद	प्रमाण	गुणकार
भाव परिवर्तन	अनंत	स्तोक
भव परिवर्तन	अनंत	अनंत गुणा
काल परिवर्तन	अनंत	अनंत गुणा
क्षेत्र परिवर्तन	अनंत	अनंत गुणा
द्रव्य परिवर्तन	अनंत	अनंत गुणा

परिवर्तनों का काल

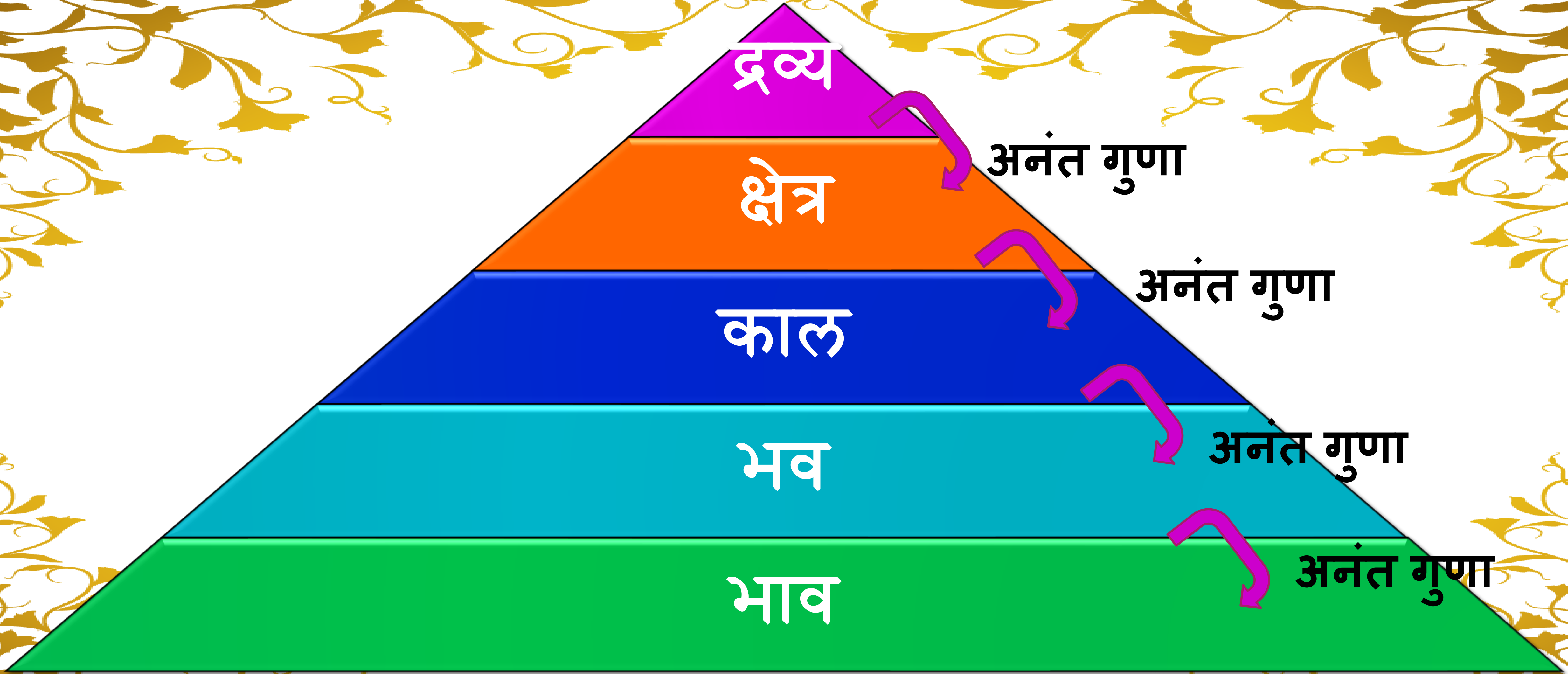

- Reference : गोम्मटसार जीवकाण्ड, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका, गोम्मटसार जीवकांड - रेखाचित्र एवं तालिकाओं में

Presentation developed by
Smt. Sarika Vikas Chhabra

- For updates / feedback / suggestions, please contact

  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889